mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-18 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
18 जनवरी 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

कौन हैं सितांशू ... @ पेज 7

वायु प्रदूषण का बढ़ना एक विकट समस्या, इससे निपटने के उपाय आवश्यक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि वायु प्रदूषण का बढ़ना एक ÷विकट÷ समस्या है और इससे निपटने के लिए जो उपाय आवश्यक हैं, वे भी ÷कठोर÷ होने चाहिए। इसके

● उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकार को दिया सख्त निर्देश

साथ ही कोर्ट ने उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकार से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले अपने इलाकों में पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की बात कही। न्यायमूर्ति ए एस ओका तथा न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने इस तथ्य पर गौर किया कि दिल्ली की तरह राजस्थान सरकार ने भी राज्य के एनसीआर क्षेत्रों में पटाखों की बिक्री तथा फोड़ने पर स्थायी तथा पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है तथा उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा से भी ऐसा ही करने को कहा।

पीठ ने कहा कि जब तक ये दोनों राज्य आदेश पारित नहीं कर देते, तब तक पटाखों पर प्रतिबंध लगाने संबंधी उसका पूर्व निर्देश मामले की अगली सुनवाई की तिथि, जो 24 मार्च है, तक बढ़ा दिया जाएगा।

पीठ ने कहा, ÷पर्यावरणीय समस्याएं विकट हैं, इसलिए कठोर उपायों की आवश्यकता है।÷ साथ ही कहा कि न्यायालय को कार्रवाई करनी होगी तथा कठोर आदेश पारित करने होंगे, क्योंकि सरकार के अन्य अंग इससे परेशान नहीं हैं। पीठ ने कहा कि वह अगली तारीख पर पटाखों के निर्माण और बिक्री में शामिल फर्मों पर प्रतिबंध के खिलाफ याचिकाओं पर भी सुनवाई करेगी। जब एक वकील ने अदालत से पूर्ण प्रतिबंध हटाने का अनुरोध किया, क्योंकि यह निर्माताओं के मौलिक अधिकारों से भी संबंधित है, तो पीठ ने कहा कि पर्यावरण संबंधी समस्याएं उनके मुद्दों से आगे आती हैं। इसके बाद वकील ने अदालत से अनुरोध किया कि कम से कम ग्रीन पटाखों की अनुमति दी जाए। पीठ ने कहा, ÷हमें यह जांचना होगा कि ग्रीन पटाखे कितने ग्रीन हैं।÷

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पटाखा बनाने वाली फर्मों की याचिकाओं पर जवाब देने को भी कहा है। इससे पहले भी, अदालत ने उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकारों को अगले आदेश तक पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया था। पीठ ने कहा था कि दिल्ली सरकार ने तत्काल प्रभाव से ऑनलाइन मार्केटिंग के जरिए पूरे साल पटाखों के निर्माण, भंडारण और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। पीठ ने कहा, ÷हमारा मानना ??है कि यह प्रतिबंध तभी प्रभावी होगा जब एनसीआर का हिस्सा बनने वाले अन्य राज्य भी इसी तरह के उपाय लागू करेंगे। यहां तक ??कि राजस्थान राज्य ने भी राजस्थान के उस हिस्से में इसी तरह का प्रतिबंध लगाया है जो एनसीआर में आता है। फिलहाल, हम उत्तर प्रदेश और हरियाणा राज्यों को इसी तरह का प्रतिबंध लगाने का निर्देश देते हैं, जैसा कि दिल्ली राज्य ने लगाया है।÷

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप के शपथ ग्रहण से पहले रूस पहुंचे ईरानी राष्ट्रपति मसूद

मॉस्को (एजेंसी)। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान रूस के साथ एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए शुक्रवार को मॉस्को पहुंचे। क्रेमलिन की दीवार के पास गुमनाम सैनिकों के स्मारक पर पुष्पचक्र अर्पित करने के बाद पेजेशकियान रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बातचीत के

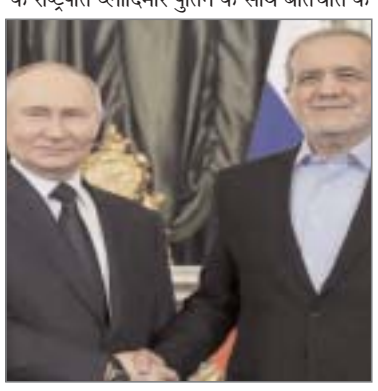

लिए क्रेमलिन (रूस का राष्ट्रपति कार्यालय) पहुंचे। यह जुलाई 2024 में पेजेशकियान के ईरान के राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होने के बाद पुतिन के साथ उनकी तीसरी बैठक है। क्रेमलिन के प्रवक्ता दमित्री पेस्कोव ने कहा कि पुतिन और मसूद पेजेशकियान जिस %व्यापक रणनीतिक साझेदारी संधि% पर दस्तखत करेंगे, उसमें व्यापार और सैन्य सहयोग से लेकर विज्ञान, शिक्षा और संस्कृति तक सभी क्षेत्र शामिल हैं। दोनों नेता इस संधि पर ऐसे समय में हस्ताक्षर करने जा रहे हैं, जब डोनाल्ड ट्रंप 20 जनवरी को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने वाले हैं। ट्रंप ने यूक्रेन में शांति कायम करने और ईरान के खिलाफ सख्त रुख अपनाने का वादा किया है, जो आर्थिक पक्ष पर चुनौतियों के साथ ही पश्चिम एशिया में अपने दबदबे वाले क्षेत्रों में सैन्य असफलताओं से जूझ रहा है।

रूसी सेना में लड़ रहे 12 भारतीयों की मौत, 16 हैं लापता

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है। इस बीच भारतीय विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि रूस ने भारत को सूचित किया है कि रूसी सेना में सेवा दे रहे 16 भारतीय लापता हैं। मंत्रालय ने कहा कि रूसी सेना में कार्यरत भारतीय नागरिकों को वापस भेजे जाने का आग्रह

किया गया है। इसने कहा कि रूसी सेना में कार्यरत 12 भारतीयों की अब तक मौत हो चुकी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, ''126 मामले (रूस की सेना में भारतीय नागरिकों के काम करने के) हैं। इन 126 में से 96 लोग भारत लौट आए हैं और रूसी सशस्त्र बलों से उन्हें मुक्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा, ''रूस की सेना में अब भी 18 भारतीय नागरिक हैं जिनमें से 16 का अता-पता नहीं है।'' जायसवाल ने कहा, ''रूस ने इन्हें लापता की श्रेणी में रखा है। जो अब भी सेना में हैं हम उन्हें मुक्त करने और वापस भेजे जाने की मांग करते हैं।'' बता दें कि, हाल ही में रूस और यूक्रेन के बीच चल रही जंग में केरल के रहने वाले एक भारतीय नागरिक की मौत हो गई थी। केरल के त्रिशूर के रहने वाले 32 वर्षीय बिनिल बाबू रूस की सेना में भर्ती थे और वह यूक्रेन के खिलाफ लड़ रहे थे। भारतीय विदेश मंत्रालय ने इस मामले को रूसी सरकार के समक्ष उठाया था।

पुणे में ट्रक ने कार को मारी टक्कर, 9 लोगों की मौत

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे शहर से सड़क हादसे का एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आ रहा है। इस सड़क हादसे में कुल 9 लोगों की

मौत हो गई है। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक, ट्रक ने एक कार को पीछे से टक्कर मार दी है। इसके कारण ये भीषण हादसा हुआ जिसमें इतनी बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो गई है। सड़क हादसे की इस घटना को लेकर अधिक जानकारी का इंतजार किया जा रहा है। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक, ये घटना पुणे के नारायणगांव इलाके में हुई है। पुणे ग्रामीण पुलिस एसपी पंकज देशमुख ने बताया है कि दुर्घटना तब हुई जब एक ट्रक ने एक कार को पीछे से टक्कर मार दी, जो आगे चलकर एक बस (जो खड़ी थी) से टकरा गई। जानकारी के मुताबिक, सड़क हादसे की ये घटना पुणे-नासिक राजमार्ग पर शुक्रवार की सुबह 10 बजे के करीब हुई है। नारायणगांव की ओर जा रही मिनीवैन को पीछे से टक्कर लग गई। इसके बाद मिनीवैन बस से टकरा गई जिसमें कोई भी सवार नहीं था। मिनीवैन में सवार सभी नौ लोगों की मौत हो गई। बीते गुरुवार को भी पुणे से हादसे की एक बड़ी खबर सामने आई थी। यहां शिकरापुर चाकन हाईवे पर एक बेकाबू ट्रेलर तेज रफ्तार से करीब 12 से 15 गाड़ियों से जा भिड़ा था। इस हादसे में 5 लोगों के गंभीर रूप से घायल होने की खबर सामने आई थी।

महाराष्ट्र के गृहराज्य मंत्री ने दिया बड़ा अपडेट

सैफ पर हमले के पीछे चोरी ही एकमात्र मकसद या अंडरवर्ल्ड

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान पर उनके मुंबई स्थित अपार्टमेंट में हुए हमले को लेकर महाराष्ट्र के गृह राज्य मंत्री योगेश कदम ने शुक्रवार को कहा कि इसके पीछे एकमात्र मकसद चोरी था। उन्होंने किसी अन्य पहलू से इनकार किया है। मंत्री योगेश कदम ने कहा कि सैफ अली खान को कोई खतरा नहीं था। उन्होंने कभी सुरक्षा की मांग भी नहीं की। उन्होंने कहा कि हमले में किसी अंडरवर्ल्ड के गैंग का हाथ नहीं है।

54 वर्षीय सैफ अली खान पर गुरुवार की सुबह बांद्रा में उनके 12वीं मंजिल स्थित फ्लैट में एक व्यक्ति ने चाकू से कई बार वार किया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। एक्टर पर गर्दन सहित कई जगहों पर चाकू से वार किया गया, जिसके बाद मुंबई के लीलावती अस्पताल में उनकी आपातकालीन सर्जरी की गई।

पुणे में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि मुंबई पुलिस ने एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है, जिसका चेहरा संदिग्ध हमलावर से मिलता है, जिसकी तस्वीर बिल्डिंग से भागते समय

सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई थी। उन्होंने बताया कि व्यक्ति का आपराधिक रिकॉर्ड है और पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। हमले में किसी आपराधिक गिरोह की संलिप्तता के बारे में पूछे जाने पर मंत्री ने कहा कि प्रारंभिक जांच में ऐसे किसी भी पहलू से इनकार किया गया है। उन्होंने बताया कि अब तक घटना के पीछे चोरी ही एकमात्र मकसद प्रतीत होता है। कदम ने बताया, ÷मुंबई पुलिस ने एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है, जिसका चेहरा सीसीटीवी कैमरे में दिखाई दे रहे व्यक्ति से मिलता-जुलता है। पुलिस एक और व्यक्ति पर नजर रख रही है।÷घटना के बाद कांग्रेस, राकांपा (शरदचंद्र पवार) और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सहित विपक्षी दलों के नेताओं ने कहा कि खान पर हमले से पता चलता है कि राज्य में फिल्मी हस्तियां सुरक्षित नहीं हैं और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस (जिनके पास गृह विभाग भी है) कानून-व्यवस्था बनाए रखने में विफल रहे हैं।

सीएम सिद्धारमैया की पत्नी के नाम आवंटित संपति जब्त

बेंगलुरु (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय ने मैसूर अर्बन डेवलपमेंट अथॉरिटी मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया की पत्नी और अन्य लोगों की संपत्ति जब्त कर ली है। ईडी ने कुल 142 संपत्तियों को जब्त किया है। इन संपत्तियों का अनुमानित मूल्य करीब 300 करोड़ रुपये है। ईडी ने यह कार्रवाई लोकायुक्त पुलिस मैसूर द्वारा दर्ज भारतीय दंड संहिता, 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 के तहत दर्ज प्राथमिकी के आधार पर की है। इस मामले में सीएम सिद्धारमैया और अन्य पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

69 साल के बुजुर्ग ने ली महासमाधि, पुलिस ने कब्र से निकाला था शव

शव को शुक्रवार को उसके निवास स्थान पर फिर से दफनाया गया

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के तिरुवनंतपुरम में 69 साल के एक व्यक्ति ने महासमाधि ली है। समाधि लेने वाले व्यक्ति के शव को शुक्रवार के दिन उसके निवास स्थान पर फिर से दफनाया गया। इस व्यक्ति ने नेय्याट्टिनकारा के पास अपने घर में ही समाधि ली थी, लेकिन अधिकारियों ने उसके परिवार के इस दावे पर संदेह जताया था। इसके बाद शव को कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया था। शव को एक धार्मिक जुलूस के साथ यहां लाया गया और ओम नमो नमः शिवाय के मंत्रों के बीच एक बड़े चौकोर गड्ढे में फिर से दफनाया गया।

उनके परिवार और दफन करने वाले लोगों ने इस समारोह को महा समाधि बताया।

गोपन स्वामी के शव को शवगृह से फूलों से सजे एक खुले वाहन में परिवार के घर लाया गया। शव को लाल कपड़े में लपेटकर बैठाया गया था। धार्मिक जुलूस के दौरान उनके रिश्तेदारों और समर्थकों ने शव पर फूल बरसाए। एक बड़ा चौकोर गड्ढा तैयार किया गया और उसका नाम ऋषि पीठम (जहाँ एक योगी बैठता है) रखा गया और अवशेषों को पूरी तरह से विभूति (पवित्र राख) से ढंककर उसमें क्रॉस-लेग्ड स्थिति में दफनाया गया। पूरे महा समाधि अनुष्ठान के दौरान, स्थानीय धर्मगुरु और संन्यासियों ने ओम नमो नमः शिवाय का जाप किया, जबकि इसे देखने के लिए वहां बड़ी भीड़ जमा हो गई। गुरुवार को कड़ी सुरक्षा के बीच गोपन स्वामी के अवशेषों को निकाला गया और उनकी रहस्यमय मौत की जांच के तहत उनका पोस्टमार्टम किया गया।

पेरेंट्स ने डांटा तो बच्ची ने कर दिया कांड

1 साल के भाई को लेकर घर से भागी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस ने माता-पिता की डांट के बाद घर से भागे दो बच्चों को ढूंढ निकाला है। 10 वर्षीय लड़की अपने एक साल के भाई को लेकर घर से भाग गई थी। यह घटना बुधवार को उस समय सामने आई, जब इन बच्चों की मां ने नरेला थाने में शिकायत दर्ज कराई और स्नढ्ढक्र दर्ज कर मामले की जांच शुरू की गई। बच्चों का पता लगाने के लिए पुलिस के कई दल लगाये गए थे। अधिकारी ने बताया कि 70 से अधिक सीसीटीवी फुटेज को खंगाला गया, जिसमें पता चला कि बच्चे नरेला मार्केट से बस में सवार हुए थे। उन्होंने बताया, ÷मामले की जांच के सिलसिले में पुलिस नरेला रेलवे स्टेशन पहुंची, जहां राजकीय रेलवे पुलिस (तत्रक्क) से बच्चों के मथुरा जाने का पता चला।÷उन्होंने बताया कि इस घटना के बारे में मथुरा पुलिस को सूचित किया गया और बाद में उन्हें मथुरा में जीआरपी द्वारा अपने संरक्षण में ले लिया गया।

पिता ने डांटा तो लगाई फांसी: उधर, बिहार के पूर्णिया जिले में गुरुवार देर रात को

पिता के डांटने पर बेटी ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। किशोरी ने जिस वक्त ये कदम उठाया मां और पिता आटा मिल पर गए थे। देर रात को घर लौटने पर पिता ने किशोरी को कमरे में फंदे के सहारे झूलता हुआ पाया। पिता ने किशोरी को पढ़ाई न करने को लेकर डांटा था। इसी से गुस्साई किशोरी ने सुसाइड जैसा खौफनाक कदम उठाया।

छठी कक्षा की छात्रा थी मृतका: मामला बायसी थाना क्षेत्र के लौटियाबाड़ी गांव से जुड़ा है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। किशोरी की पहचान मंजर आलम की बेटी रेशमा खातून के रूप में हुई। मृतक लड़की छठी कक्षा की छात्रा थी। परिजन ने बताया कि रेशमा के माता पिता घर के पास आटा मिल चलाते हैं। वो दिन रात मेहनत कर बेटी को अच्छी शिक्षा दे रहे थे जबकि रेशमा का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। पढ़ाई न करने के कारण पिता ने उसे डांट लगाई थी।

हिमाचल घूमने जाने से पहले जान लें मौसम का हाल

कब-कब होगी बारिश-बर्फबारी? पढ़ें लेटेस्ट अपडेट

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के आदिवासी और ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की से मध्यम बर्फबारी हुई जबकि निचले इलाकों में लोग शीतलहर के प्रकोप की गिरफ्त में दिखाई दिए। मौसम विभाग ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। विभाग के मुताबिक, बिलासपुर, सुंदरनगर और मंडी में घना कोहरा छाया रहा। मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार 23 जनवरी तक हिमाचल प्रदेश में जमकर बर्फबारी होगी। स्थानीय मौसम कार्यालय के अनुसार, गुरुवार सुबह से पिछले 24 घंटों में कोठी में 24 सेंटीमीटर (सेमी) बर्फबारी दर्ज की गई जबकि मनाली में 14.8 सेमी, गोंडला में 11 सेमी, मूरंग में 10 सेमी, जोत में 7 सेमी, कल्पा में 6.7 सेमी, खदराला में 5 सेमी, पूह में 4.5 सेमी, सांगला में 4.2 सेमी, केलांग व छतराड़ी में चार-चार सेमी और कुफरी में 2.4

सेमी बर्फबारी हुई। विभाग के मुताबिक, कुछ स्थानों पर हल्की बारिश हुई, जिसमें भरमौर में 10 मिलीमीटर (मिमी), सियोबाग में 8.2 मिमी, जोगिंदरनगर में आठ मिमी, भुंतर में 7.1 मिमी, सलूणी में 6.3 मिमी, गोहर में छह मिमी, बजौरा में 5.5 मिमी, रोहडू व धर्मशाला में पांच मिमी, पालमपुर में 4.2 मिमी और घुमारवीं और पंडोह में चार मिमी बारिश हुई।

ऊना और हमीरपुर में भीषण शीतलहर की स्थिति देखी गई जबकि बर्थिन और कांगड़ा में शीतलहर का प्रकोप जारी है। मौसम विभाग ने बताया कि बिलासपुर में पाला और भुंतर, सुंदरनगर व कांगड़ा के अलग-अलग इलाकों में गरज के साथ बारिश हुई। विभाग के मुताबक, न्यूनतम तापमान में कोई खास बदलाव नहीं हुआ। विभाग ने बताया कि रात के समय ताबो सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां न्यूनतम तापमान शून्य से 13.5 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। वहीं कुसुमसेरी में तापमान शून्य से 12.2 डिग्री सेल्सियस नीचे, कल्पा में शून्य से 6.2 डिग्री नीचे, मनाली में शून्य से 2.1 डिग्री नीचे, नारकंडा में शून्य से 1.5 डिग्री नीचे, शिमला में शून्य से 2.8 डिग्री नीचे और धर्मशाला में शून्य से 4.8 डिग्री नीचे न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया।

अश्लीलता फैलाने के मामले में ठाणे पुलिस का बड़ा एक्शन

ठाणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में पुलिस ने एक बार में कथित तौर पर अश्लीलता फैलाने के आरोप में 8 महिलाओं और इतने ही ग्राहकों समेत करीब 40 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। शुक्रवार को इस बारे में जानकारी देते हुए एक अधिकारी ने बताया कि कल्याण-शील रोड पर स्थित बार में 14 जनवरी की रात की गई छापेमारी के दौरान वहां कथित अश्लीलता का मामला सामने आया था। अधिकारी ने बताया कि डोंबिवली में मनपाड़ा पुलिस ने बुधवार को बार से जुड़े 23 लोगों, 8 महिला कर्मियों और 8 ग्राहकों के खिलाफ आपत्तिजनक आचरण के लिए केस दर्ज किया है। ठाणे जिले में ही पुलिस ने एक स्कूल टीचर के खिलाफ भी केस दर्ज किया है, जिसने कथित तौर पर कक्षा के अंदर 11 साल के छात्र को थप्पड़ मारा था। एक अधिकारी ने शुक्रवार को इस बारे में जानकारी देते हुए कहा कि घटना 13 जनवरी को भिवंडी इलाके के एक स्कूल में हुई। अधिकारी ने नाबालिग के माता-पिता की शिकायत का हवाला देते हुए कहा कि शिक्षक सैफ इकबाल अंसारी ने कथित तौर पर उस बच्चे को पीटा, जब वह किताब लेने के लिए अपने क्लासमेट के पास गया था।

रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव शहडोल में पहुंची उमरिया जिले की स्व-सहायता समूह की महिलाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव शहडोल में उमरिया जिले के बांधवगढ़ कृषि वनोपज उत्पादक कंपनी लिमिटेड करकेली ब्लॉक के ग्राम चंदवार की महिलाएं महुआ के लड्डू बनाकर बेच रहीं है और अच्छी आय अर्जित कर रही है। समूह की अध्यक्ष पूनम तिवारी बताती है कि महुआ के लड्डू की बहुत डिमान्ड है और यह स्वास्थ्य वर्धक भी है। ठंड के दिनो में लोग इन लड्डुओं उपयोग करते है और यह प्राकृतिक तरीके से तैयार किये जाते है। समूह की अध्यक्ष पूनम तिवारी ने बताया कि महुआ के आटे को भूंजकर इसमें तिलि, काजू, बादाम, मूंगफली और खजूर के पाऊडर का उपयोग किया जाता है। उन्होंने बताया समूह की महिलाएं इस कार्य में अच्छी आय होने से बेहद खुश है और सरकार को धन्यवाद दे रही है। समूह की अध्यक्ष पूनम तिवारी कहती है हमारी समूह की दीदीयां बिरसा मुण्डा संकुल की ग्राम कौहका की 15 दीदी उड़द दाल की बड़ी का उत्पादन कर रही है, वे कहती है कि अभी तक हमने 50 किलो का यहां पर लड्डू और इतनी ही मात्रा में बड़ी का विक्रय किया है। हम लोग एफपीओ से जुड़कर 200 दीदियां पशुपालन से दूध और उससे बने उत्पाद से जुड़ने की तैयारी में है, हमें आजीविका मिशन का भरपूर सहयोग मिल रहा है। वे सरकार की नितियों और मिलने वाली सहायता से बेहद उत्साहित भी है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के 20 हजार से अधिक कार्मिक सेल्फी से दर्ज करा रहे उपस्थिति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के 20 हजार से अधिक नियमित, संविदा एवं आउटसोर्स कार्मिक अपनी उपस्थिति सेल्फी के माध्यम से दर्ज करा रहे हैं। ई-उपस्थिति के आधार पर ही वेतन भुगतान हो रहा है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो वेतन कटौती हो रही है। यह क्रम विगत तीन वर्षों से चल रहा है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सभी कार्मिक अपनी उपस्थिति प्रतिदिन कार्यालय प्रारंभ होने के निर्धारित समय प्रात: 10 बजे एवं शाम को कार्यालय छोडने के समय 6 बजे सेल्फी आधारित उपस्थिति प्रणाली अथवा बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली के माध्यम से दर्ज करा रहे हैं। कंपनी ने कहा है कि इससे एक ओर जहां कार्मिकों में अनुशासन की भावना को प्रोत?साहन मिल रहा है, वहीं उपभोक?ता सेवाओं को समय पर पूर्ण करने करने के लिए अनुकूल वातावरण बन रहा है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी प्रदेश में ई-ऑफिस लागू करने वाली पहली कंपनी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने समूचे कंपनी कार्यक्षेत्र के अंतर्गत कॉर्पोरेट से लेकर मैदानी दफ्तरों में ई-ऑफिस प्रणाली से काम करना पांच वर्ष पूर्व शुरू किया था। अब ई ऑफिस प्रणाली की सफलता के पांच वर्ष पूर्ण हो गए हैं। ई-ऑफिस प्रणाली से उपभोक्ताओं के कार्य जल्दी निपट रहे हैं और कार्यालयीन कार्य में समय की बचत हो रही है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा दो दर्जन से भी अधिक आईटी के ऐसे अनुप्रयोग लागू किये हैं जो कि देश के पॉवर सेक्टर में एक मिसाल हैं।

राज्यपाल को लोक सेवा आयोग का 67वां वार्षिक प्रतिवेदन भेंट किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल से मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग के पदाधिकारियों ने राजभवन में सौजन्य भेंट की। आयोग के अध्यक्ष डॉ. राजेशलाल मेहरा ने आयोग का 67वां वार्षिक प्रतिवेदन भेंट किया। इस अवसर पर सदस्य डॉ. कृष्णकांत शर्मा और डॉ. नरेन्द्र कुमार कोष्टी एवं सचिव श्री प्रबल सिपाहा मौजूद थे। राज्यपाल श्री पटेल को आयोग अध्यक्ष डॉ. मेहरा ने बताया कि आयोग द्वारा वर्ष 2023-24 में राज्य शासन के विभिन्न विभागों के पदों की पूर्ति के लिए 70 विज्ञाप्ति जारी की गई है। इस अवधि में 21 परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें 13 हजार 833 अभ्यर्थियों का साक्षात्कार किया गया। वर्ष 2023-24 में 3 हजार 114 और वर्ष 2024-25 में 1 हजार 829 अभ्यर्थियों का चयन कर 4 हजार 943 पदों के चयन की अनुशंसा शासन को भेजी गई। उन्होंने आयोग द्वारा किए गए राज्य पात्रता परीक्षा के आयोजन, मूल्यांकन प्रक्रियाओं मे किए जा रहे नवाचारों से अवगत कराया।

सभी नागरिक टीबी की जांच अवश्य कराएँ- उप मुख्यमंत्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि सभी नागरिक टीबी की जांच अवश्य कराएँ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान प्रदेश में चलाया जा रहा है, जिसमें भारत सरकार द्वारा वर्ष-2025 तक भारत को क्षय रोग मुक्त किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा द्वारा मंदसौर में निक्षय मित्र बनकर फूड बॉस्केट भी प्रदान किये गये। उन्होंने सभी से निक्षय मित्र बनने की अपील भी की। निक्षय मित्र बनने के लिए निक्षय मित्र का नाम, मोबाईल नंबर, ई-मेल आई.डी. एवं एड्रेस की आवश्यकता होती है। निक्षय मित्र बनने के लिए लिंक पर जाकर संबंधित जानकारी दर्ज कर नि-क्षय मित्र बना जा सकता है। या मोबाइल नंबर +91 9425108553 पर संपर्क भी कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री 19 जनवरी को करेंगे फिट इण्डिया क्लब का लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 19 जनवरी को गौतम नगर में फिट इण्डिया क्लब का लोकार्पण करेंगे। दोपहर 3 बजे आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय खेल मंत्री श्री मनसुख मंडाविया भी शामिल होंगे। कार्यक्रम में 6 विभागीय खेल अधोसंरचना का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन भी किया जायेगा। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने इस संबंध में मंत्रालय में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने आवश्यक तैयारियों के संबंध में संबंधितों को दिशा-निर्देश दिये। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि देश में प्रथम फिट इण्डिया क्लब का लोकार्पण होने जा रहा है। इसमें व्यायाम, फिटनेस, खेल गतिविधियाँ एवं स्वास्थ्य सहित पोषण आहार संबंधी कार्यक्रम होंगे। वॉकिंग ट्रेक, योग एवं मेडिटेशन केन्द्र के साथ ओपन जिम, पारम्परिक खेल जोन, लायब्रेरी एवं किड्स जोन का प्रावधान भी किया जा रहा है। साथ ही महिला फिटनेस सेंटर, मल्टीपर्पस इण्डोर हॉल एवं स्वीमिंग पूल का भूमि-पूजन किया जायेगा। यह फिट इण्डिया क्लब पूरे प्रदेश के लिये एक मॉडल होगा। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि खेल अधोसंरचना के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन में प्रदेश के नागौद-सतना, बुधनी-सीहोर, हरदा, टिमरनी-हरदा और नारायणगढ़-मंदसौर में इण्डोर हॉल तथा जोबट-अलीराजपुर में आउटडोर खेल परिसर का लोकार्पण एवं शिवपुरी में हॉस्टल भवन का भूमि-पूजन किया जाना है। कार्यक्रम में खेलो-बढ़ो अभियान का शुभारंभ भी किया जायेगा। अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों और आम नागरिकों को खेलों से जोड़ने तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिये एक नवाचार के रूप में खेलो-बढ़ो अभियान शुरू किया जायेगा।

गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के लिए उच्च शिक्षा विभाग प्रतिबद्ध

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा श्री अनुपम राजन ने प्रदेश में संचालित समस्त अशासकीय महाविद्यालयों का सत्यापन एवं भौतिक निरीक्षण राजस्व अधिकारियों की टीम बनाकर करने के निर्देश जारी किये हैं। उक्त निर्देशों के पालन में जिला कलेक्टरों द्वारा कार्यवाही की जाकर जानकारी एकत्रित की जा रही है। इस संबंध में अपर मुख्य सचिव श्री राजन ने अद्यतन स्थिति की समीक्षा कर जानकारी यथाशीघ्र उपलब्ध कराने के निर्देश भी अधिकारियों को दिये। जारी निर्देश में निर्धारित प्रपत्र में महाविद्यालय संचालन की स्थिति, उपलब्ध कमरों की कुल संख्या, कमरों की बैठक क्षमता, कुल प्रवेशित विद्यार्थी संख्या, निरीक्षण के दौरान उपस्थित विद्यार्थी संख्या, कुल स्टाफ संख्या, निरीक्षण के दौरान उपस्थित स्टाफ संख्या, महाविद्यालय के बारे में स्थानीय नागरिकों का अभिमत एवं महाविद्यालय के विषय में विद्यार्थियों का अभिमत प्राप्त किया जायेगा।

अपर मुख्य सचिव श्री राजन द्वारा जारी निर्देश अनुसार उच्च शिक्षा की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जायेगा। अशासकीय महाविद्यालयों को अब कलेक्टर के सत्यापन एवं प्रतिवेदन उपरांत ही निरंतरता प्रदान की जायेगी। अशासकीय महाविद्यालयों को स्थापना एवं निरंतरता के लिए अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी करने की प्रक्रिया को अब और अधिक सख्त किया गया है।

जिले के अग्रणी महाविद्यालय द्वारा प्रत्येक 3 माह में निरीक्षण एवं जिला कलेक्टर की टीम द्वारा मौका परीक्षण उपरांत अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी किया जायेगा। इसके साथ ही पूर्व में जारी प्रक्रिया अनुसार पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन एवं सत्यापित दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे। प्रदेश में अशासकीय गैर-अनुदान अप्राप्त महाविद्यालयों की लगभग संख्या 773 (सात सौ तिहतर) एवं अशासकीय अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों की लगभग संख्या 73 है।

मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह योजना एक वरदान है -उप मुख्यमंत्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार सभी वर्ग के लोगों की चिंता कर उनके जीवन को संवारने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हर माता पिता का सपना होता है कि उनकी बेटी का विवाह बिना किसी चिंता के हो। माता-पिता को पैसे के अभाव में बेटी का विवाह संपन्न कराने में अनेकों परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह योजना वरदान साबित हो रही है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा मंदसौर जिले में सामूहिक कन्या विवाह योजना में धुंधडका सामूहिक विवाह सम्मेलन में 51 जोड़ों के आशीर्वाद समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सामूहिक विवाह में वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए सभी के सुखी वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं दी। सभी 51 जोड़ों को 5-5 हजार रुपए उपहार राशि भी दी गई। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने सामुदायिक भवन निर्माण कराने का आश्वासन दिया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र धुंधडका में एक्स-रे मशीन का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र धुंधडका में एक्स-रे मशीन की सुविधा उपलब्ध हो जाने से अब आसपास के लोगों को एक्स-रे की सुविधा प्राप्त होगी। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि आस-पास के गांव वालों को मंदसौर नहीं जाना पड़ेगा, उनको धुंधडका अस्पताल में ही एक्स-रे की सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि राज्य शासन द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं।

121 करोड़ रुपए का पौने 3 किमी लंबा ब्रिज तैयार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के सबसे लंबे लव (गणेश मंदिर से गायत्री मंदिर तक) फ्लाई ओवर का काम पूरा हो गया है। पौने 3 किमी लंबा यह ब्रिज 121 करोड़ रुपए की लागत से बना है। 15 दिन में थर्ड आर्म यानी, तीसरी भुजा और सर्विस लेन भी पूरी हो गई है। इस ब्रिज का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी कर सकते हैं। हालांकि, केंद्रीय मंत्री गड़करी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की तारीख अभी तय नहीं हो पाई है। इससे पहले ब्रिज की ओपनिंग 3 जनवरी को होने की उम्मीद थी, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन से कार्यक्रम टाल दिया गया था। उम्मीद है कि इसी सप्ताह ब्रिज से ट्रैफिक शुरू कर दिया जाएगा।

यह भोपाल का सबसे लंबा ब्रिज है। इसकी लंबाई 2734 मीटर यानी, करीब पौने 3 किमी है। इसका काम दिसंबर 2020 में शुरू हुआ था। जिसे 2 साल में बन जाना था। लेकिन इसे बनने में 4 साल लगे। पहले 26 दिसंबर को ब्रिज की ओपनिंग करने की बात सामने आई थी, लेकिन थर्ड आर्म नहीं बनने की वजह से ट्रैफिक शुरू नहीं हो सका था। वहीं, पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह गुजरात दौरे पर चले गए थे। 3 जनवरी को भी उद्घाटन की तारीख तय की जा रही थी। लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री सिंह के निधन के चलते उद्घाटन कार्यक्रम टाल दिया गया। पीडब्ल्यूडी के अफसरों के मुताबिक, गणेश मंदिर से वल्लभ भवन चौराहा की ओर आने वाली पहली और दूसरी आर्म का काम पूरा हो चुका है। इस रूट पर लोड टेस्ट भी हो चुका है। फिर भी ट्रैफिक का संचालन शुरू होने पर लोगों को कोई परेशानी न आए, इसलिए यहां कुछ बदलाव किए जा रहे हैं।

वन, वन्य-जीव संरक्षण और संवर्धन में अग्रणी है मध्यप्रदेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध मध्यप्रदेश के वन और वन्य-जीव हमारी पहचान हैं। शासन इनके संरक्षण और संवर्धन के लिये संकल्पित है। राज्य सरकार द्वारा वनों के संरक्षण और संवर्धन के लिये की गई ईमानदार एवं प्रभावी पहल का परिणाम है कि वन आवरण में स्थायित्व आने के साथ ही वन्य-प्राणियों के प्रबंधन की दिशा में अनेक नवाचार किये जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन विभाग'' ग्रामीण अंचलों में विकास गतिविधियों का संचालन करने वाला एक प्रमुख संगठन है। विगत दो दशकों में वन प्रबंधन में काफी बदलाव आये हैं। वन संसाधनों पर जैविक दबाव बढ़ा है। उन्होंने कहा कि जनसंख्या वृद्धि के साथ वनोपज की आवश्यकता और उपलब्धता में अंतर बढ़ा है। वन

क्षेत्रों में अवैध कटाई को कड़ाई से रोका जा रहा है। वनोपज की माँग और आपूर्ति के अंतर को कम करने के लिये विभागीय रोपण के साथ निजी वनीकरण को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन तथा वन्य-जीवों के प्रति जागरूकता लाने के लिये वन महोत्सव, अनुभूति, वन्य-प्राणी और संरक्षण सप्ताह जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कर प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लोगों को जोड़ा जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि %बफर-सफर% योजना के तहत पर्यटकों के लिये अनेक नई गतिविधियाँ प्रारंभ की गयी हैं। प्रदेश के टाइगर रिजर्व के बफर क्षेत्रों में पर्यटक प्राकृतिक स्थलों, वन और वन्य-प्राणी दर्शन के साथ विभिन्न ईको-पर्यटन गतिविधियों का आनंद ले रहे हैं। ईको-पर्यटन से पर्यटक प्रदेश की ओर आकर्षित होंगे। इससे कोर क्षेत्र पर पर्यटन का दबाव भी कम होगा। डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 15 हजार से अधिक वन समितियाँ गठित की गई हैं। इन समितियों की कार्य-प्रणाली को और अधिक गतिशील बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन प्रबंधन में ग्रामीणों की सहभागिता को अधिक व्यावहारिक और पारदर्शी बनाने तथा संयुक्त वन प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिये इसे कानूनी आधार देने की व्यवस्था की गई है। मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य है, जिसमें वनोपज से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय प्राथमिक वनोपज समितियों को हस्तांतरित करने की पहल की गई है। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था से वनवासियों के हितों का संरक्षण हुआ है।

ऑर्मी मैराथन 19 जनवरी को भोपाल में

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने भोपाल वासियों से 19 जनवरी को आयोजित होने वाली ऑर्मी मैराथन में बड़ी संख्या में भाग लेने का आह्वान किया है। इस मैराथन का उद्देश्य फिटनेस, एकता और देशभक्ति को प्रोत्साहित करना है। फिट इंडिया, रन विद इंडियन ऑर्मी के आदर्श वाक्य के साथ यह आयोजन हर उम्र और वर्ग के लोगों को शारीरिक स्वास्थ्य और देशप्रेम के प्रति प्रेरित करेगा। मंत्री श्री सारंग ने विशेष रूप से युवाओं और परिवारों को इस आयोजन में बढ़-चढ़कर शामिल होने का आग्रह किया है। मैराथन में तीन श्रेणियाँ रखी गई हैं, जिसमें 21 किलोमीटर (हॉफ मैराथन), 10 किलोमीटर, और 5 किलोमीटर की दौड़ शामिल है। इन श्रेणियों के लिए क्रमश: 600, 500 और 400 रुपये का रजिस्ट्रेशन शुल्क निर्धारित किया गया है। प्रतिभागियों को टी-शर्ट और भागीदारी प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाएंगे।

रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया जा सकता है, और अधिक जानकारी के लिए 62690-33347 पर संपर्क किया जा सकता है।

यह मैराथन भोपाल के द्रौणांचल से शुरू होकर वीआईपी रोड होते हुए द्रौणांचल पर ही समाप्त होगी। सुबह 6 बजे प्रारंभ होने वाले इस आयोजन में लगभग 12 हज़ार प्रतिभागी शामिल होंगे। आयोजन के दौरान 10 लाख रुपये तक के आकर्षक नकद पुरस्कार भी दिए जाएंगे। हॉफ मैराथन में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को 1 लाख, द्वितीय स्थान को 50 हज़ार और तृतीय स्थान को 25 हज़ार रुपये प्रदान किये जायेंगे। इसी प्रकार 10 किलोमीटर की दौड़ में 50 हज़ार, 25 हज़ार और 15 हज़ार रुपये के पुरस्कार दिए जाएंगे। 5 किलोमीटर दौड़ के लिए 20 हज़ार, 15 हज़ार और 10 हज़ार रुपये के नकद पुरस्कार निर्धारित हैं।

यह आयोजन भारतीय सेना दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के सुदर्शन चक्र कोर द्वारा आयोजित किया जा रहा है। सेना दिवस 15 जनवरी को मनाया जाता है, जो 1949 में जनरल केएम करियप्पा के भारतीय सेना के पहले कमांडर इन चीफ के रूप में कार्यभार ग्रहण करने की याद में मनाया जाता है। इस ऐतिहासिक अवसर पर ऑर्मी मैराथन का उद्देश्य सेना और आमजन के बीच जुड़ाव को बढ़ावा देना और इसे भोपाल में वार्षिक खेल आयोजन के रूप में स्थापित करना है।

इस कार्यक्रम के माध्यम से फिट इंडिया अभियान को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ यह आयोजन स्थानीय समुदायों, खेल प्रेमियों और सशस्त्र बलों के सदस्यों को एकजुट करने का प्रयास है। भोपाल में आर्मी मैराथन मुख्यालय पश्चिम एमपी सब एरिया के तत्वाधान में आयोजित होने वाला यह पहला खेल आयोजन है।

हटवा, गोडाही एवं चोराही में मुख्यमंत्री जनकल्याण शिविर आयोजित

योजनाओं के हितलाभ से कोई पात्र व्यक्ति वंचित न रहे: विधायक

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित हर पात्र व्यक्ति को लाभान्वित करने के उद्देश्य से प्रदेश के संवेदनशील मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के द्वारा ''मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान'' प्रारंभ किया गया है। अभियान का उद्देश्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के हर पात्र हितग्राही को योजनाओं से लाभान्वित कराना है। अधिकारी कर्मचारी यह सुनिश्चित करें कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से कोई पात्र व्यक्ति वंचित न रहे। उक्त आशय के विचार विधायक सिहावल विश्वामित्र पाठक ने जनपद पंचायत सिहावल के ग्राम पंचायत हटवा, गोडाही एवं चोराही में आयोजित मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर व्यक्त किए। कार्यक्रम का मां सरस्वती जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं कन्यापूजन कर विधिवत शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक पाठक ने उपस्थित जन समुदाय को महत्वपूर्ण योजनाओं प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, लाडली बहना योजना, लाडली लक्ष्मी योजना, आयुष्मान भारत योजना, संबल योजना ,प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, पेंशन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, नक्शा खसरा खतौनी की प्रतिलिपि सहित विभिन्न विभागों में संचालित हितग्राहीमूलक योजनाओं एवं सेवाओं के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए आगे आकर पात्रतानुसार आवेदन कर लाभ लेने का आग्रह किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि पिछले दस वर्षों में सिहावल क्षेत्र का समुचित विकास नहीं हुआ है लेकिन पिछले एक वर्ष में पुल पुलियों, रोड निर्माण, पंचायतों में अधोसंरचना विकास, आवारा पशुओं के लिए पशुबाड़े की व्यवस्था, तालाबों का सुदृढ़ीकरण सौंदर्यीकरण सहित सभी क्षेत्रों में विकास हो रहा है। अब क्षेत्र के विकास में कोई कोर कसर नहीं रहेगी। विधायक ने अधिकारियों से शिविर में प्राप्त आवेदन पत्रों का तत्परता से निराकरण करने के लिए कहा। मुख्य अतिथि ने महिला बाल विकास एवं स्व सहायता समूह के स्टाल का अवलोकन भी किया। शिविर में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र, लाडली लक्ष्मी योजना के प्रमाणपत्र एवं आयुष्मान कार्ड वितरित किए गए।

कार्यक्रम में एसडीएम सिहावल एस पी मिश्रा ने शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में शामिल योजनाओं एवं प्रदाय की जाने वाली सेवाओं से अवगत कराया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से किरण सिंह सरपंच हटवा, नेवसूआ कुशवाहा सरपंच गोंडाही, महाबली यादव सरपंच चोराही, राजेश सिंह जनपद सदस्य, शिव कुमारी जायसवाल, राकेश सिंह बैस टीआई बहरी, अनुसुइया वाजपेई सीडीपीओ, गरुण रावत एसएडीओ, अशोक शुक्ला, पुनीत पाण्डेय, सुभाकर द्विवेदी, बैकुंठ सिंह, मनोज सिंह, अनिल पांडेय, गोपाल द्विवेदी, इनायत बक्स, छविलाल कोल, लालजी पांडेय, राज बहोर शाहू, विपिन बिहारी पाण्डेय, बृजमोहन शाहू, हरि प्रसाद पाण्डेय, कौशतुभ सिंह, बंका केवट, लाल बहादुर यादव, बृजेंद्र शुक्ला, महमुद्दीन अंसारी, सहित विकासखंड स्तरीय अधिकारी कर्मचारी, वरिष्ठजन, हितग्राही बंधु, गणमान्यजन उपस्थित रहे।

हाईस्कूल में अनुपस्थित मिले शिक्षकों पर होगी कार्रवाई

शिक्षा समिति के अध्यक्ष की जांच में मिली अनियमितता, कंप्यूटर कक्षाएं भी नहीं चल रहीं

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अमरपुर स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्रीमान सिंह पटेल, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष मनोज सिंह चौहान और ब्लॉक शिक्षा अधिकारी इंद्रसेन त्रिपाठी ने शुक्रवार सुबह 11 बजे विद्यालय का दौरा किया। इस दौरान विद्यालय में जांच में कई अनियमितताएं सामने आईं। कई शिक्षक गैरहाजिर मिले और विद्यालय में नियमित रूप से कक्षाएं नहीं चल रही थीं।

इसके अलावा विद्यालय में बना हुआ कंप्यूटर कक्ष भी निष्क्रिय पाया गया। जहां छात्रों को कंप्यूटर की शिक्षा नहीं दी जा रही थी। इसे लेकर शिक्षा समिति के अध्यक्ष पटेल ने स्कूल प्रबंधन को कड़ी फटकार लगाई। साथ ही बीईओ को निर्देश दिए कि अनुपस्थित शिक्षकों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जाए।

उन्होंने नियमित शिक्षकों को भी कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। ब्लॉक शिक्षा अधिकारी इंद्रसेन त्रिपाठी ने पुष्टि की कि पाई गई अनियमितताओं पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी और संबंधित कर्मचारियों से स्पष्टीकरण मांगा जाएगा।

कचरा फेंकने को लेकर बुजुर्ग महिला से मारपीट

एक दर्जन लोगों ने घर में घुसकर किया हमला, एक ही परिवार के 6 लोग घायल

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में मामूली विवाद मारपीट में बदल गया। गढ़ीमलहरा थाना क्षेत्र के निवारी गांव में वृद्धा के कचरा फेंकने को लेकर विवाद शुरू हुआ। आरोप है कि 60 वर्षीय भवानी बाई गुरुवार सुबह जब घर का कचरा फेंकने गईं, तो राहुल नाम के व्यक्ति ने के घर के सामने से गुजरने पर उन्हें रोक दिया। कचरा फेंकने से मना करने के साथ ही राहुल ने गाली-गलौज शुरू कर दी। जब बुजुर्ग महिला ने इसका विरोध किया, तो राहुल सिंह और वीरेंद्र सिंह ने उनके साथ लात-घूंसों से मारपीट कर दी।

एक दर्जन से अधिक लोग लाठी, डंडे लेकर पहुंचे: पीड़ित परिवार ने गुरुवार दोपहर गढ़ीमलहरा थाने में शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत की जानकारी मिलते ही शाम को राहुल और वीरेंद्र के साथ एक दर्जन से अधिक लोग लाठी, डंडे, कुल्हाड़ी और पत्थर लेकर भवानी बाई के घर पहुंच गए। आरोपियों ने घर में घुसकर परिवार पर हमला कर दिया। हमले में परिवार के 6 लोग घायल हो गए। दूसरे पक्ष के भी चार लोग घायल हुए हैं।

पुलिस ने घायलों को कराया भर्ती: स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने रात करीब 10 बजे सभी घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। गढ़ीमलहरा थाना प्रभारी सुरभि शर्मा ने बताया कि गुरुवार की सुबह कचरा फेंकने को लेकर विवाद हुआ था जिसमें ठाकुर परिवार के दो लोगों ने एक महिला के साथ मारपीट की थी। मामले में एफआईआर दर्ज की गई थी। शाम को फिर से विवाद की जानकारी लगने पर तीन लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। आरोपियों की तलाश की जा रही है जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा

सड़क सुरक्षा को लेकर कलेक्टर सख्त

जिले के ब्लैक स्पॉट पर विशेष प्रबंध के निर्देश, इंटरसेप्टर से बढ़ेगी चालानी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर कलेक्टर हर्षल पंचोली ने शुक्रवार को आयोजित सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में वाहन दुर्घटनाओं को लेकर गंभीर चिंता जताई। उन्होंने जिले के सभी दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में तत्काल सुरक्षा प्रबंध करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने विशेष रूप से पोडकी तिराहा, बदरा तिराहा, निगवानी चौराहा, तुलरा चौराहा, कलेक्ट्रेट और जिला पंचायत के प्रवेश द्वार समेत कई महत्वपूर्ण स्थानों पर सुधार कार्य के आदेश दिए। सभी ब्लैक स्पॉट पर स्पीड ब्रेकर, साइन बोर्ड, रोड स्टड, रंबल स्ट्रिप और उचित प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। साथ ही मोड़ों पर लगी झाड़ियों को हटाने और सड़क मार्गों से अतिक्रमण हटाने के भी निर्देश दिए।

बैठक में पुलिस अधीक्षक मोती उर रहमान ने यातायात व्यवस्था को और कड़ा करने की बात कही। उन्होंने यातायात पुलिस को इंटरसेप्टर वाहन से चालान कार्रवाई बढ़ाने के निर्देश दिए। विशेष रूप से अनूपपुर और कोतमा बस स्टैंड पर यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने पर जोर दिया। सभी अधिकारियों को अनुविभागीय दंडाधिकारियों के साथ समन्वय कर कार्य करने को कहा गया।

कार्बन मोनोऑक्साइड गैस से पति की मौत, पत्नी गंभीर

कमरे में कोयला जलाकर सोए थे दंपती, बेटे ने दरवाजा तोड़कर बाहर निकाला

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले के सिद्धि कला खुर्द गांव में ठंड से बचने के लिए कमरे में कोयला जलाकर सोए दंपती में से पति की मौत हो गई, जबकि पत्नी की हालत गंभीर बनी हुई है।

घटना गुरुवार रात की है, जब लक्ष्मण प्रसाद कुशवाहा और उनकी पत्नी माया कुशवाहा अपने पक्के मकान के कमरे में ठंड से बचने के लिए कोयला जलाकर सो गए। शुक्रवार सुबह जब दोनों नहीं उठे और दरवाजा नहीं खोला, तो उनके बड़े बेटे चंदन ने दरवाजा तोड़कर देखा तो दोनों बेहोश पड़े थे।

दोनों को तुरंत बैढन जिला चिकित्सालय ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने लक्ष्मण कुशवाहा को मृत घोषित कर दिया। माया देवी का इलाज एक निजी अस्पताल में चल रहा है। सासन चौकी प्रभारी प्रियंका मिश्रा के अनुसार, मौत का कारण कोयले से निकली कार्बन मोनोऑक्साइड गैस हो सकती है।

10 दिन पहले हुई थी दो नाबालिगों की मौत: विशेषज्ञों के अनुसार, कोयला जलने से उत्पन्न कार्बन मोनोऑक्साइड गैस शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर देती है, जिससे ब्लड सर्कुलेशन रुक जाता है और मौत हो सकती है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी सिंगरौली के बरगवां क्षेत्र के एक रेस्टोरेंट में 10 दिन पहले इसी तरह की घटना में दो कर्मचारियों की मौत हो चुकी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बिजली कटौती को लेकर नाराज हुए सांसद

अधिकारियों को जले हुए ट्रांसफॉर्मर, टूटे पोल बदलने को कहा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने शुक्रवार दोपहर अधीक्षण इंजीनियर कार्यालय पहुंचे। यहां बिजली विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में मुख्य अभियंता, अधीक्षण अभियंता, सहायक यंत्री और कनिष्ठ यंत्री सहित सभी प्रमुख अधिकारी मौजूद थे। सांसद ने क्षेत्र में जले हुए ट्रांसफॉर्मर, बिजली कटौती, टूटे पोल और बिजली लाइनों पर पेड़-पौधों की समस्या को प्रमुखता से उठाया।

विशेष रूप से गोरियारा क्षेत्र में बिजली लाइनों के ऊपर पेड़-पौधों की समस्या गंभीर है, जिससे शॉर्ट सर्किट की घटनाएं बढ़ रही हैं। स्थानीय लोगों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए सांसद ने अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। अधिकारियों ने इन समस्याओं की जांच कर शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया है।

बैठक में सांसद ने क्षेत्र के नागरिकों की बिजली संबंधी अन्य शिकायतों को भी सुना और उनके समाधान के लिए विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

किसानों को समय पर नहीं मिला धान खरीदी का पैसा

17,642 लोगों से खरीदी गई 9.21 लाख क्विंटल धान, एनसीसीएफ ने 119.01 करोड़ को नहीं किया भुगतान

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में धान खरीदी की स्थिति गंभीर बनी हुई है। 2 दिसंबर से शुरू हुई धान खरीदी में इस बार राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ (एनसीसीएफ) को जिम्मेदारी दी गई, लेकिन यह प्रयोग असफल साबित हो रहा है। जिले में कुल 21,974 किसानों ने पंजीकरण कराया था, जिनमें से 17,642 किसानों से 9.21 लाख क्विंटल धान की खरीदी की जा चुकी है।

किसानों को ऋण वसूली के बाद कुल 198.10 करोड़ रुपए का भुगतान किया जाना था, लेकिन एक महीने बाद भी 119.01 करोड़ रुपए का भुगतान लंबित है। एनसीसीएफ बजट की कमी का हवाला दे रहा है। स्थिति और भी गंभीर इसलिए है क्योंकि उपार्जन केंद्रों में लगभग 94,000 क्विंटल धान खुले में पड़ी है, जबकि मौसम विभाग ने आगामी दिनों में बारिश की संभावना जताई है। धान खरीदी की अंतिम तिथि 23 जनवरी है। समय कम होने और मौसम की चुनौती ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। भुगतान के लिए किसान लगातार चक्कर काट रहे हैं, लेकिन उन्हें केवल आश्वासन ही मिल रहे हैं।

गोदामों का प्रबंधन अधूरा: जिले में 22 मिलर्स मिलिंग का कार्य करते हैं। राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ के नियमों के अनुसार, मिलिंग के पश्चात 65% चावल एफसीआई के गोदामों में और 35% चावल नागरिक आपूर्ति निगम के गोदामों में जमा किया जाना है। जिले में एफसीआई का एक भी गोदाम नहीं है। अब तक एनसीसीएफ द्वारा पयारी ग्राम में 5400 मेट्रिक टन क्षमता और अन्नपूर्णा गोदाम रेउदा में 2700 मेट्रिक टन क्षमता वाले गोदाम का चयन किया गया है। हालांकि, अब तक इस संबंध में कोई स्पष्ट आदेश नहीं आया है, जिसके चलते मिलर्स मिलिंग के पश्चात चावल को नागरिक आपूर्ति निगम (नान) के गोदामों में ही जमा करा रहे हैं।

स्थिति जस की तस बनी हुई: बादलों की आमद और बारिश के खतरे के बीच उपार्जन केंद्रों पर धान को सुरक्षित रखने की व्यवस्था केवल पन्नियों के भरोसे है। बारिश से बचाने के लिए पन्नियां तो उपलब्ध कराई गई हैं, लेकिन नीचे से बहने वाले पानी के लिए कोई इंतजाम नहीं है। जिले में अब भी 4332 किसान अपनी धान बेचने के लिए शेष हैं। आगामी दिनों में इनकी भीड़ उपार्जन केंद्रों पर पहुंचेगी। हालांकि, बारिश और भीड़ के प्रबंधन को लेकर कोई ठोस योजना नहीं बनाई गई है।

गुरुवार को अधिकतम तापमान 28 डिग्री तक पहुंचा

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना जिले में इस सप्ताह कड़ाके की ठंड ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। शुक्रवार को जिले का न्यूनतम तापमान गिरकर 8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जबकि अधिकतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। घने कोहरे और शीतलहर के कारण लोग घरों में दुबकने को मजबूर हो गए हैं।

सप्ताह की शुरुआत में तापमान अधिक, अंत में भारी गिरावट: सप्ताह की शुरुआत में सोमवार को न्यूनतम तापमान 12 डिग्री और अधिकतम 25 डिग्री सेल्सियस था। मंगलवार और बुधवार को न्यूनतम तापमान 13 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि अधिकतम तापमान क्रमशः 25 और 26 डिग्री सेल्सियस रहा।

जाहिर आम सूचना

सर्व साधारण आमजन, व्यक्ति संस्था, निकाय को इस आम सूचना के माध्यम से सूचित किया जाता है कि सुवैल मोहम्मद तनय मोहम्मद इदरीश, निवासी 241/34, पचमठा चौराहा श्रम कल्याण मैदान के पास, निपनिया, रीवा, तहसील हुजूर, जिला रीवा म0प्र0 द्वारा भूमि खसरा क्र0 1353/3/1 कुल रकवा 1600 वर्गफीट भूमि स्थित मौजा निपनिया, वार्ड नं 01 शेष वार्ड, ज0नं0 318, पटवारी हल्का निपनिया 30 सर्किल, रीवा ब्लाक रीवा, तहसील हुजूर, जिला रीवा (म0प्र0). स्थित भूमि/भवन के स्वामित्य का मूल हक विलेख/विक्रय पत्र दिनांक 24-06-2021, ई-पंजीकरण संख्या MP3284920021A1478604 जो सुवैल मोहम्मद के नाम का है को निक्षेप/बंधक कर वित्तीय सहायता/ऋण प्राप्त किये जाने बावत् IDFC First Bank Limited, (M/s Pragati Micro Business Loan), Branch-Rewa, Tehsil Huzur, Distt. Rewa (M.P.) में आवेदन किया है जिस भूमि के पूर्व क्रेता श्री राधेश्याम मालपानी तनय श्री ईश्वरदास मालपानी, निवासी- निपनिया रीवा तहसील हुजूर, जिला-रीवा (म0प्र0) द्वारा भूमि खसरा क्रमांक 1353/3 का अंश रकवा 1200 वर्गफीट जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 03/09/1985 दस्तावेज क्रमांक 2139 एवं भूमि खसरा क्र0 1353/3 अंश रकवा 405 वर्गफीट जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 24-03-1986 दस्तावेज क्र0 3885 के माध्यम से क्रय/प्राप्त किया गया था उक्त दोनों विक्रय पत्र गुम हो जाना बताया है. और यह भी बताया है कि उक्त दस्तावेज कहीं गिरवी बंधक, अनुबंधित, भारित नहीं है। इस बावत् इस सार्वजनिक आम सूचना के माध्यम से, जिस किसी व्यक्ति, संस्था, निकाय, आमजन को किसी भी प्रकार की आपत्ति है या किसी भी प्रकार का भार गहन गिरवी बन्धक अनुबन्धित वसीयत या किसी प्रकार से हित निहित हो तो सूचना प्रकाशन के 07 (सात) दिवस के अन्दर मेरे पक्षकार के कार्यालय IDFC First Bank Limited, (M/s Pragati Micro Business Loan), Branch-Rewa, Tehsil Huzur, Distt. Rewa (M.P.) मोबाइल नं0 9685957777 या मेरे कार्यालय चेम्बर नं0 34 जिला न्यायालय के पीछे रीवा (म0प्र0) मे कार्यालयीन समय दिन 11 बजे से 5 बजे के मध्य लिखित मौखिक व दूरभाष नं0 9425357469 से मय दस्तावेजो सहित अपना पक्ष व आपत्ति प्रस्तुत करे। अन्यथा वाद मुददत किसी भी संस्था व्यक्ति निकाय द्वारा की गई आपत्ति स्वीकार नही होगी और न ही मेरे पक्षकार के ऊपर बंधनकारी होगी और मेरा पक्षकार उक्त संपत्ति का पाक-साफ मानते हुये वर्तमान स्वामी के मूल हक विलेख के दस्तावेजों को साम्यिक/साधारण बन्धक कर ऋण की प्रतिभूति में निक्षेप/बंधक करेगा।

स्थान:- रीवा
दिनांक:- 17-01-2025

भवदीय,
डा0 आनन्द कुमार पाण्डेय
एडवोकेट रीवां (म0प्र0)
वास्ते-IDFC First Bank Limited

मंत्री विजयवर्गीय ने संत प्रसन्नसागर से लिया आशीर्वाद

45 मिनट तक चली चर्चा, आचार्य बोले- विनम्रता और धर्म का रास्ता अपनाएं

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में मध्य प्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने शुक्रवार को प्रसिद्ध जैन संत अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के दर्शन किए। डेरापहाड़ी अतिशय क्षेत्र में आयोजित इस मुलाकात में मंत्री ने 45 मिनट तक आचार्यश्री के साथ आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा की और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

जैन समाज के डॉ. सुमति प्रकाश जैन के अनुसार, कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 8 बजे श्रद्धालुओं द्वारा आचार्यश्री के पाद प्रक्षालन से हुई। दोपहर के बाद मंत्री विजयवर्गीय के साथ विशेष मुलाकात के पश्चात आचार्यश्री का पूजन किया गया, जिसमें स्थानीय जैन समाज के साथ-साथ देशभर से आए गुरुभक्तों ने भाग लिया।

'धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए': कार्यक्रम के दौरान आचार्य प्रसन्नसागर जी ने अपने प्रवचन में जीवन में विनम्रता और धार्मिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को हमेशा विनम्र रहते हुए धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए, यही जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

'छतरपुर के लोगों को गर्व होना चाहिए': मंत्री ने बताया कि आज मैं महाराज के दर्शन करने के लिए आया था। मेरा बहुत लंबा संपर्क रहा है। इंदौर के पास एक पुष्पगिरी स्थान है, वहां मैं उनके संपर्क में रहा। महाराज जी ने जो लंबे समय से तपस्या की है वह अद्भुत है मेरी जानकारी में अभी तक किसी संत ने इतनी लंबी तपस्या नहीं की है। सबसे बड़ी बात यह है कि वे छतरपुर के पुत्र हैं, इसलिए छतरपुर के लोगों को गर्व होना चाहिए कि ऐसे तपस्वी साधु हैं। मैं यहां आकर धन्य हो गया। मैंने उनके दर्शन किया और आशीर्वाद लिया है।

कांग्रेस नेता का भाजपा-आरएसएस पर हमला

राम किसी की निजी संपत्ति नहीं, धर्म के नाम पर राजनीति कर रहे

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में शुक्रवार दोपहर राजीव भवन कांग्रेस कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल ने भाजपा और आरएसएस पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की टिप्पणी का विरोध करते हुए कहा कि भगवान श्री राम न तो भाजपा की और न ही आरएसएस की निजी संपत्ति हैं, वे सभी के हैं।

पटेल ने आरोप लगाया कि भाजपा केवल धर्म के नाम पर लोगों को बांटकर राजनीतिक लाभ उठा रही है। उन्होंने कालीचरण महाराज द्वारा महात्मा गांधी पर की गई अभद्र टिप्पणी का मुद्दा भी उठाया और कहा कि भाजपा सरकार द्वारा कोई कार्रवाई न करना दर्शाता है कि भाजपा-आरएसएस की विचारधारा स्वतंत्रता संग्राम के विरुद्ध है।

कांग्रेस मुद्दे पर मौन नहीं रहेगी: व्यापम घोटाले के संदर्भ में उन्होंने कहा कि भले ही मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है, लेकिन कांग्रेस इस मुद्दे पर मौन नहीं रहेगी। प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले में पैसों का बोलबाला है। साथ ही उन्होंने मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई की व्यवस्था पर भी सवाल उठाए।

ये रहे मौजूद: पत्रकार वार्ता के दौरान मुख्य रूप से मौजूद रहे कांग्रेस जिला अध्यक्ष महाप्रसाद पटेल, पूर्व विधायक आलोक चतुर्वेदी, पूर्व विधायक नीरज दीक्षित, कार्यकारी अध्यक्ष अनीश खान, पूर्व जिला अध्यक्ष लखन पटेल, मनोज त्रिवेदी, आवेद सिद्दीकी यूथ कांग्रेस अध्यक्ष लोकेंद्र वर्मा, कांग्रेस प्रवक्ता संतोष तिवारी, केशु राजा, अभिलेख खरे, हर प्रसाद अनुरागी, दीप्ति पांडेय, लक्ष्मी चौबे,अवधेश सोनकिया, सूर्य प्रताप सिंह नरेश पटेल, कपिल रिछारिया आदि लोग मौजूद रहे।

विचार

जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी हमलों से उठते सवाल

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए केंद्र सरकार ने जो भी निर्णय लिए और जो भी कार्रवाई की उसका देश की जनता ने भरपूर साथ दिया। फिर चाहे वह अचानक नोटबंदी का कड़ा फैसला रहा हो या धारा 370 हटाने का सख्त कदम रहा हो। मुल्क के असली मालिकों ने इसे इसलिए सहर्ष स्वीकार कर लिया कि अब जम्मू-कश्मीर समेत देश में आतंकवादी घटनाएं सिरे से खत्म हो जाएंगी और सुख-शांति का पैगाम लिए देश के साथ ही जम्मू-कश्मीर भी तरक्की के रास्ते पर सरपट दौड़ सकेगा। पर अफसोस कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। इन हमलों में आमजन के साथ ही देश के जवान भी शहीद हो रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं का बढ़ना न केवल क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति को चिंताजनक बनाता है, बल्कि इससे राजनीतिक स्थिरता पर भी प्रश्नचिन्ह लग जाते हैं। हाल के दिनों में बडगाम, बांदीपुरा और श्रीनगर में आतंकवादियों द्वारा की गई फायरिंग की घटनाओं ने पुनः इस ओर सोचने पर मजबूर किया है कि आतंकवादियों के खिलाफ चल रहे अभियानों में कहीं कोई बड़ी चूक तो नहीं हुई है। मौजूदा वक्त में जबकि भारत के पड़ोस समेत अनेक देश जंग के मैदान में उतरे हुए हैं, तब हमारे देश की सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी कई चुनौतियां उभरी हैं। ऐसे में इस मामले को महज जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद से जोड़कर नहीं देखा जा सकता है। आतंकवाद की घटनाओं की पुनरावृत्ति होना वाकई एक गहरी चिंता का विषय है। ऐसा नहीं है कि हमारे देश की सुरक्षा व गुप्तचर एजेंसियां फेल हुई हैं, बल्कि आतंकवाद को माकूल जवाब देने का सिलसिला भी जारी है। अनेक घुसपैठ और हमलों को नाकाम भी किया गया है। बावजूद इसके जिस तरह से आतंकवादियों के हौसले बुलंद होते दिख रहे हैं, वह वाकई चिंता का विषय है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जवानों का हौसला बढ़ाने के लिए उनके बीच दीपावली पर्व मनाने पहुंचे, रक्षा मंत्री भी लगातार हौसला अफजाई करते देखे जाते हैं। ऐसे में आतंकवाद को तो जड़ से खत्म हो ही जाना चाहिए। वहीं दूसरी तरफ जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं के बढ़ने को लेकर नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला ने जो कहा वह भी विचारणीय है। दरअसल फारुक अब्दुल्ला इन घटनाओं को एक संभावित साजिश के तौर पर देखते हैं।

चुनावी जीत की नई इबारत लिखती महिला मतदाता

ललित गर्ग

चुनावों में विभिन्न राजनीतिक दल महिलाओं को लुभाने के लिये आकर्षक कल्याणकारी योजनाओं एवं मुत की सुविधाएं देने की बढ़-चढ़ कर घोषणाएं करने लगे हैं। महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाई गईं कल्याणकारी योजनाएं एवं मुत की सुविधाएं अब गेमचेंजर बन रही हैं। महिलाओं के खाते में सीधे नगद ट्रांसफर की जाने वाली स्कीम तो भारत की राजनीति में वोट बटोरने का एक जांचा-परखा एवं सशक्त माध्यम बन गया है।

यूं तो लम्बे समय से महिलाओं को लेकर तरह-तरह की घोषणाएं होती रही है लेकिन मध्य प्रदेश में इस योजना की कामयाबी के बाद यही कहानी महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखण्ड में दोहरायी गयी है। जिससे चुनावों में लगातार महिला मतदाताओं का उत्साह बढ़ता जा रहा है और किसी की दल की जीत हार में उसकी भूमिका भी स्पष्ट होती जा रही है। इसी विषय को लेकर एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि महिला केंद्रित योजनाओं के कारण इन महिला मतदाताओं की संख्या में बड़ा इजाफा हुआ है। भारत के चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक 2014 में कुल मतदाता 83.4 करोड़ थे, जो 2024 में बढ़कर 97.8 करोड़ हो गये हैं। इसमें महिला मतदाता की संख्या सबसे ज्यादा बढ़ी है। एसबीआई रिसर्च टीम की रिपोर्ट के मुताबिक देश में अब 100 पुरुष मतदाताओं पर 95 महिला मतदाता की संख्या है। पिछले दस वर्षों में जिन नौ करोड़ नये वोटरों ने वोट दिया, उसमें महिलाओं की हिस्सेदारी 5.3 करोड़ है। महिलाओं का मतदान के प्रति बढ़ता रूझान लोकतंत्र की मजबूती के लिये एक शुभ संकेत है।

नये अध्ययन से यह भी खुलासा हुआ है कि महिला साक्षरता में वृद्धि हुई है जिसका सीधा असर महिला मतदाताओं की संख्या बढ़ने से है। महिला साक्षरता में एक फीसदी की वृद्धि से महिला मतदाताओं की संख्या में पच्चीस फीसदी तक का इजाफा हो सकता है। दिलचस्प पहलू यह भी कि एससी और एसटी वर्ग में मतदान में लगातार इजाफा हुआ, वहीं सामान्य वर्ग में कम हुआ। अब सरकारें बनाने में महिला मतदाताओं की भूमिका लगातार बढ़ती एवं निर्णायक होती जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने तीन बार के शासनकाल में विकास पर जोर देने के साथ-साथ महिला उत्थान पर भी बहुत ज्यादा ध्यान दिया। महिलाओं को हर क्षेत्र में प्रोत्साहन मिल रहा है, स्वतंत्र पहचान मिल रही है और वे राजनीति के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा, क्षमता एवं कौशल का लोहा मनवा रही है। मोदी सरकार ने 27 साल से भी ज्यादा इंतजार के बाद पहली बार महिला आरक्षण बिल लोकसभा और राज्यसभा दोनों से पारित कराया। इस बीच मोदी सरकार ने महिलाओं को लेकर बनाई गई योजनाओं का नाम भी ऐसे रखा, जो सीधे महिलाओं के दिल को छू रही है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के जरिए महिलाओं को गैस सिलिंडर देना, जनधन योजना के तहत खाता खुलवाना, मुस्लिम महिलाओं को लेकर तीन तलाक को कानूनी रूप से खत्म करना जैसे विधेयक ने जहां प्रधानमंत्री मोदी के कद को बढ़ाया वही महिलाओं की राजनीति में सक्रियता एवं मतदान में अधिक हिस्सेदारी को नये पंख दिये हैं। इन योजनाओं से 20 करोड़ से भी ज्यादा महिलाओं, 5 करोड़ से ज्यादा स्कूलों छात्राओं और 11 करोड़ से ज्यादा कामकाजी महिलाओं को लाभ पहुंचा है।

अब महिलाएं राजनीति एवं राजनेताओं के वजूद को बनाने में महत्वपूर्ण हो गयी है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र व झारखंड में सत्तारूढ़ दलों की चुनावों के बाद फिर वापसी में महिला मतदाताओं की भूमिका निर्णायक रही। मध्यप्रदेश में लाडली बहन, महाराष्ट्र में माझी लाडकी बहिन व झारखंड में मंईयां सम्मान योजना इसके उदाहरण हैं। इसी तरह पश्चिम बंगाल में लक्ष्मी भंडार, कर्नाटक में गृहलक्ष्मी, ओडिशा में शुभद्रा योजना तथा असम में मुख्यमंत्री महिला उद्यमिता योजना सामने आई है। यह होड़ आगामी दिल्ली विधानसभा चुनावों में भी नजर आ रही है। एक ओर जहां आप सरकार ने महिला वोटरों के लिये महिला सम्मान योजना के तहत 2100 रुपये देने का वायदा किया, वहीं कांग्रेस ढाई हजार रुपये देने की योजना बना रही है। इस दिशा में भाजपा भी गंभीर है। दरअसल, दिल्ली में महिला वोटरों का प्रतिशत पुरुष वोटरों के पास पहुंच गया है। कहा जाता है कि साल 2020 के चुनावों में महिला मतदान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन जरूरत इस बात की है कि महिलाओं से जुड़ी योजनाएं एवं उन्हें दी जाने वाली मुफ्त सुविधाएं सत्ता प्राप्ति या वोट हासिल करने का स्वार्थी हथियार न होकर स्थायी प्रभाव व महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का जरिया हो।

उल्लेखनीय तथ्य है कि जब किसी राज्य में महिलाओं का विकास हुआ है तो वे अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति अधिक सजग हुई हैं। उन्हें सरकारों की मुफ्त की स्कीमें भी खूब लुभा रही हैं। एसबीआई की रिसर्च रिपोर्ट बताती है कि महिला केंद्रित योजना लागू करने वाले राज्यों की संख्या 19 हो गई है। जिसमें महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, असम व कर्नाटक जैसे राज्य अग्रणी हैं। इन राज्यों में औसतन 7.8 लाख (कुल 1.5 करोड़) महिला वोटरों की संख्या में इजाफा हुआ है। केन्द्र एवं राज्यों की महिला कल्याणकारी योजनाओं के कारण महिला मतदान बढ़ा है, जिनमें 45 लाख महिलाएं साक्षरता में वृद्धि के कारण मतदाता बनी हैं, 36 लाख महिलाएं रोजगार और मुद्रा योजना की वजह से मतदान किया है, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर का मालिक बनने के कारण 20 लाख महिलाएं मतदान के लिए गई थी और वहीं 21 लाख महिलाएं स्वच्छता, बिजली और पानी की पहुंच में सुधार के कारण मतदान के लिये अग्रसर हुई।

चुनाव के दौरान नेताओं एवं राजनीतिक दलों के द्वारा किए गए मुफ्त सुविधाओं के वादों को केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसके आर्थिक पक्ष पर भी विचार किया जाना चाहिए। पंजाब में महिलाओं को एक हजार रुपये देने के आम आदमी पार्टी की घोषणा के बावजूद यह राशि न देना महिलाओं को ठगना है, उनके सम्मान को आघात लगाना है। अगर इन वादो के लिए राज्य के पास अपर्याप्त धन और सीमित संसाधन हैं तो ऐसे वादो से बचना चाहिए। राज्यों द्वारा चुनावी फायेद के लिए की गई मुफ्त सुविधाओं की घोषणा के लिए राजस्व जुटाना मुश्किल हो जाता है। मुफ्त की योजनाओं से राज्य का आर्थिक ढांचा कमजोर हो सकता है क्योंकि दी जाने वाली सब्सिडी का राज्य की वित्तीय स्थिति पर प्रभाव पड़ेगा। अगर कोई सत्ताधारी दल, राजनीतिक लाभ के लिये सरकारी पैसे को मुफ्तखोरी पर खर्च करते हैं, तो इससे राज्य का वित्तिय ढांचा बिगड़ सकता है। राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव के दौरान सार्वजनिक धन से मुफ्तखोरी और तर्कहीन वादे करना स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए भी खतरा पैदा कर सकते हैं। मुफ्तखोरी की घोषणाएं स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की धारणा के खिलाफ है क्योंकि जाहिर तौर पर हर राजनीतिक दल की सार्वजनिक धन तक पहुंच नहीं होगी। मुफ्त के वादे को लेकर राजनीतिक विश्लेषकों का यह भी सवाल है कि यह प्रथा कैसे नैतिक है क्योंकि यह मतदाताओं को लुभाने के लिए एक तरह से रिश्वत देने के समान है। जानकारों का मानना है कि श्रीलंका के आर्थिक पतन का कारण वहां के राजनीतिक दलो द्वारा दिए गए मुफ्त उपहार रहे हैं। हालांकि गरीबों की मदद के लिए चिकित्सा, शिक्षा, पानी और बिजली जैसी आधारभूत जरुरतों और कुछ कल्याणकारी योजनाओं के लिए धन के व्यय को जायज ठहराया जा सकता है। इसी तरह महिलाओं के लिये कुछ योजनाएं रोजगार एवं आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उपयोगी हो सकती है।

24 अकबर रोड कांग्रेस का नया अध्याय लिखेगा

नीरज कुमार दुबे

दिल्ली के लुटियंस जोन में स्थित '24 अकबर रोड' की पहचान बीते करीब पांच दशकों से भले ही कांग्रेस के मुख्यालय की है, लेकिन यह पता कई ऐसे फैसलों, नीतियों और घटनाओं का गवाह है जो देश की सबसे पुरानी पार्टी के साथ भारत के लिए भी परिवर्तनकारी एवं ऐतिहासिक साबित हुए। इस पते ने इंदिरा गांधी से लेकर मल्लिकार्जुन खरगे तक सात कांग्रेस अध्यक्ष देखे। यह इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की दुखद हत्या, सीताराम केसरी की अध्यक्ष पद से विदाई, 1980 में इंदिरा गांधी की सत्ता में वापसी, 1984 की प्रचंड जनादेश वाली जीत, 1991, 2004 और 2009 की गठबंधन वाली सरकार, 2014 और 2019 की करारी हार तथा 2024 की हार में भी भविष्य की उम्मीद समेत कई उतार-चढ़ाव वाले ऐतिहासिक पलों का साक्षी है। अब कांग्रेस ने आज से 24 अकबर रोड़ से कुछ किलोमीटर दूर '9ए कोटला' मार्ग पर अपना मुख्यालय स्थानांतरित कर लिया। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने नए मुख्यालय का उद्घाटन किया। हालांकि पार्टी ने स्पष्ट किया है कि वह '24 अकबर रोड' को खाली नहीं करेगी।

हम आपको बता दें कि देश की आजादी के बाद से कांग्रेस का मुख्यालय '7 जंतर-मंतर रोड' हुआ करता था लेकिन आपातकाल के बाद की चुनावी हार और फिर कांग्रेस के विभाजन के बाद बदली परिस्थितियों के बीच 1978 में यह पता बदल गया। उस समय मुश्किल दौर का सामना कर रहीं इंदिरा गांधी को उनके नेतृत्व वाली कांग्रेस (आई) के राज्यसभा सदस्य जी. वेंकटस्वामी ने अपने आधिकारिक निवास '24, अकबर रोड' को पार्टी के कामकाज के लिए दे दिया। इसके बाद से लुटियंस जोन में सफेद रंग का यह बंगला कांग्रेस मुख्यालय बन गया। महत्वपूर्ण बात यह है कि '24 अकबर रोड' पर कांग्रेस ने 1980 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व में सत्ता में वापसी की। वर्ष 1984 में उनकी हत्या के बाद हुए लोकसभा चुनाव में पार्टी ने 400 से अधिक सीटें जीतीं थीं। इसके बाद के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा और तत्कालीन पार्टी अध्यक्ष और प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सत्ता से विदाई हो गई।

वर्ष 1991 के चुनाव से पहले राजीव गांधी की हत्या हो गई, हालांकि पार्टी ने गठबंधन की बदौलत सत्ता में वापसी की और फिर '24 अकबर रोड' पर पी वी नरसिम्हा राव के वर्चस्व का दौर शुरू हुआ। इसके कुछ साल बाद सीताराम केसरी अध्यक्ष बने, हालांकि 'मंडल' और 'कमंडल' के प्रभुत्व वाली राजनीति के उस दौर में कांग्रेस का ग्राफ नीचे की ओर जाने लगा। फिर कांग्रेस के भीतर सोनिया गांधी को पार्टी की कमान सौंपने की मांग तेज होने लगी। इसके बाद, वर्ष 1998 में सोनिया गांधी की सक्रिय राजनीतिक पारी की शुरू हुई और केसरी की '24 अकबर रोड' से विदाई हुई। कांग्रेस के विरोधी यह आरोप भी लगाते हैं कि केसरी के साथ पार्टी मुख्यालय में अपमानजनक व्यवहार किया गया। सोनिया गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष का पदभार संभालने के बाद '24 अकबर रोड' की धमक फिर से बढ़ने लगी और कांग्रेस का ग्राफ भी तेजी से उठने लगा। वर्ष 1999 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की हार के बावजूद पार्टी ने 2004 के चुनाव में शानदार वापसी की और उसके नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) की सरकार बनी।

2009 के चुनाव में कांग्रेस का ग्राफ और बढ़ा तथा उसने खुद की 200 से अधिक सीटों और गठबंधन के सहयोगियों की बदौलत सत्ता बरकरार रखी।

वर्ष 2014 में कांग्रेस के लिए मुश्किल दौर शुरू हुआ और उस चुनाव में पार्टी अपने इतिहास में 44 सीटों के सबसे न्यूनतम आंकड़े पर सिमट गई। इसके अगले चुनाव में भी कांग्रेस की करारी हार हुई और उसे मात्र 52 सीटें मिलीं। इस मुख्यालय पर कांग्रेस का आखिरी लोकसभा चुनाव 2024 का रहा जिसमें पार्टी की हार हुई, लेकिन उसने 99 सीटें हासिल कीं और यह उम्मीद पैदा हुई कि भारतीय राजनीति में वह अपना पुराना गौरव फिर से हासिल कर सकती है। कांग्रेस का मुख्यालय '24 अकबर रोड' पर रहते हुए इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, नरसिम्हा राव, सीताराम केसरी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी की कमान संभाली। कांग्रेस मुख्यालय बनने से पहले इस इमारत में 1961 से दो साल तक म्यांमार की लोकतंत्र समर्थक नेता और नोबेल शांति पुरस्कार पाने वालीं आंग सान सू की यहां रही थीं। सू की उस समय करीब 15 साल की थीं और अपनी राजनयिक मां के साथ यहां आई थीं। उस समय '24 अकबर रोड' को 'बर्मा हाउस' के नाम से जाना जाता था। वैसे, इस भवन का निर्माण अंग्रेजी हुकूमत में एडविन लुटियंस ने 1911 और 1925 के बीच करवाया था।

अब कांग्रेस का जो नया मुख्यालय बना है उसको लगभग 242 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया गया है। इंदिरा गांधी भवन को पार्टी और नेताओं की आवश्यकताओं के हिसाब से डिजाइन किया गया है। इस मुख्यालय में प्रशासनिक, संगठनात्मक और रणनीतिक गतिविधियों का ठीक से संचालन करने के लिए आधुनिक सुविधाएं हैं। इस भवन का नामकरण पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नाम पर किया गया है। इंदिरा भवान में आधुनिक सुविधाओं और टेक्नोलॉजी के ज्यादा से ज्यादा उपयोग का विशेष ध्यान रखा गया है। बैठक कक्ष, पुस्तकालय, मीडिया सेंटर, कैफेटेरिया, सम्मेलन कक्ष आदि कांग्रेस की कार्यशैली को और उन्नत बनाएंगे। हम आपको यह भी बता दें कि इस नये मुख्यालय में ऊर्जा दक्षता का विशेष ध्यान रखा गया है। इंदिरा भवन को ग्रीन बिल्डिंग के मानकों के अनुरूप बनाया गया है। भवन की वास्तुकला इसे भव्य दर्शाती है।

रियल-स्टेट कारोबारी की कार पेड़ से टकराई, उड़े परखच्चे, मौत

देर-रात मोड़ पर अनकंट्रोल हुई, दोस्त गंभीर, पिता मर्डर-केस में जेल में बंद

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में गुरुवार देर रात तेज रफ्तार कार मोड़ पर अनियंत्रित होकर पेड़ से जा टकराई। हादसे में कार सवार रियल स्टेट कारोबारी युवक की मौत हो गई। वहीं, उसका दोस्त गंभीर रूप से घायल है। उसकी हालत भी नाजुक बताई जा रही है। वहीं मृतक का पिता मर्डर केस में उम्र कैद की सजा काट रहा है। घटना कोटा थाना क्षेत्र की है।

राजस्व कॉलोनी स्थित संजय हाईट्स निवासी चंद्रकुमार जायसवाल (30) रियल स्टेट कारोबारी है। बुधवार की रात वह अपने दोस्त ऋषभ जैन को लेकर घर से कार में घूमने निकला था। दोनों कोटा की तरफ गए थे। वहां से रात करीब ढाई बजे घर लौट रहे थे।

अनकंट्रोल होकर पेड़ से टकराई कार: कार चंद्रकुमार चला रहा था। देर रात कार की रफ्तार काफी तेज थी। उनकी कार कोटा से एक किलोमीटर पहले मुखी विहार कॉलोनी के पास पहुंची थी। तभी मोड़ पर अनियंत्रित हो गई और सीधे पेड़ से जा टकराई।

एयरबैग खुला फिर भी नहीं बची युवक की जान: तेज रफ्तार कार के पेड़ से टकराते ही एयरबैग खुल गए। लेकिन टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। एक महिला ने हादसे की जानकारी पुलिस को दी। खबर मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। तत्काल परिजन दोनों को अपोलो अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां इलाज के दौरान चंद्रकुमार की मौत हो गई। वहीं उसके दोस्त ऋषभ की स्थिति अभी भी नाजुक बनी हुई है।

देर रात हादसे की वजह से समय पर नहीं मिल पाई मदद: तेज रफ्तार कार पेड़ से टकराई तो जोरदार आवाज आई। इसे सुनकर आसपास रहने वाले अपने घरों से बाहर निकले। लेकिन, किसी ने मदद नहीं की। इस दौरान सड़क से गुजर रहे लोगों ने भी हादसे को नजरअंदाज कर दिया। किसी ने घायलों को बाहर निकालने में मदद नहीं की। बाद में पुलिस की टीम वहां पहुंची तब घायलों को कार से बाहर निकाला जा सका।

वैष्णो देवी दर्शन करने गया था परिवार: चंद्रकुमार के परिवार के सदस्य वैष्णो देवी दर्शन के लिए जम्मू-कश्मीर गए थे। केवल चंद्रकुमार घर पर अकेला था। सभी दर्शन कर वापस बिलासपुर लौट रहे थे। तभी उन्हें सड़क हादसे की जानकारी मिली। इसके बाद सभी गुरुवार देर रात तक बिलासपुर पहुंचे। हादसे में युवक की मौत से परिवार के लोग सदमे में हैं।

कार आगे और पीछे से हुई क्षतिग्रस्त: इस हादसे के बाद पुलिस ने घायलों को अस्पताल भेजकर वाहन को जब्त कर लिया है। आसपास के लोगों ने बताया कि कार की रफ्तार बहुत अधिक रही होगी। कार सीधे पेड़ से टकराई है। इसके बाद दूसरे पेड़ से भी टकराई। इसके कारण कार के आगे और पीछे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हुआ है। फिलहाल पुलिस इस मामले की जांच कर रही है।

इंटरसिटी हत्याकांड में जेल में बंद है पिता: मृतक युवक चंद्रकुमार के पिता हल्लो उर्फ विजय कुमार जायसवाल बिल्डर और व्यवसायी हैं। साल 2010 में इंटरसिटी होटल में हुए हत्याकांड में वह आरोपी हैं और जेल में सजा काट रहा है। बता दें कि गुड्डू सोनकर (28) और उसके जीजा ननका घोरे (38) की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस केस में पुलिस ने विजय के साथ ही उसके भाई जय उर्फ गुड्डू जायसवाल, अजय उर्फ जिज्जी जायसवाल, मनोज अग्रवाल, ऋषिराज मुखर्जी, उसके छोटे भाई सम्राट मुखर्जी और हनी समदरिया सहित 7 लोगों को गिरफ्तार किया था। इस मामले में जिला एवं सत्र न्यायालय ने आरोपियों को उम्र कैद की सजा सुनाई थी।

धान खरीदी में 80 लाख की गड़बड़ी

जांच में 6529 बोरी मिले कम, समिति के 4 कर्मचारी निलंबित, भौतिक सत्यापन में हुआ खुलासा

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला में धान खरीदी में बड़ी गड़बड़ी पायी गई है। जांच टीम ने जब धान खरीदी केन्द्र में भौतिक सत्यापन किया, तो इस मामले का खुलासा हुआ। जिसमें 6529 बोरी धान कम मिला। साथ में बारदाने में भी अनियमतिता मिली है। जिसके बाद समिति के 4 कर्मचारियों को निलंबित कर दिया गया है। मिली जानकारी के मुताबिक जिला के सभी धान खरीदी केन्द्रों का भौतिक सत्यापन संयुक्त जांच टीम द्वारा किया जा रहा है। ऐसे में तमनार धान खरीदी केन्द्र का जब भौतिक सत्यापन किया गया। तब पता चला कि यहां बड़ी गड़बड़ी हुई है। जांच के दौरान 6529 बोरी 2611.60 क्विंटल धान यहां कम पाया गया।

जिसकी भुगतान राशि 80 लाख 95 हजार 960 रुपये होता है। इसके अलावा ऑनलाइन में दर्ज बारदानों के बदले 4054 नए बारदाने अधिक तथा 5980 बारदाने कम पाए गए हैं। इसके बाद जब जांच रिपोर्ट सामने आया, तो कलेक्टर के निर्देश पर सहकारी व उप पंजीयक सहाकारी संस्था द्वारा दोषी कर्मचारियों को निलंबित किया गया है।

इन कर्मचारियों पर हुई कार्रवाई: धान खरीदी केन्द्र में गड़बड़ी किए जाने के मामले में 4 कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। इसमें सहायक समिति प्रबंधक निलाद्री पटनायक, कम्प्यूटर ऑपरेटर मधुबाला पटनायक, फड़ प्रभारी भरतलाल राठिया और बारदाना प्रभारी शिवशंकर भगत शामिल हैं। धान खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण पर्यवेक्षक अपेक्स बैंक द्वारा किया जाता है। ऐसे में पर्यवेक्षण नहीं किए जाने की वजह से अपेक्स बैंक परिक्षेत्र तमनार के पर्यवेक्षक सुरेन्द्र साव को भी हटा दिया गया है।

धान खरीदी प्रभावित नहीं होगी: सहकारिता एवं उप पंजीयक सहकारी संस्था के उप आयुक्त सीएस जायसवाल ने बताया कि भौतिक सत्यापन में धान खरीदी केन्द्र तमनार में धान स्टॉक 6529 बोरी की कमी पाई गई।

साथ ही नए व पुराने बारदानों में भी गड़बड़ी मिली है। दोषी कर्मचारियों को निलंबित कर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। धान खरीदी केन्द्र में कर्मचारियों की व्यवस्था कर ली गई है। जिससे धान खरीदी कार्य प्रभावित नहीं होगी।

दावा आपत्ति पेश करने की अंतिम तिथि 30 तक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। ग्राम खैरबना तहसील मनेन्द्रगढ़ उप तहसील नागपुर की जनता को सूचित किया जाता है कि कार्यालय तहसीलदार उप तहसील नागपुर मनेन्द्रगढ़, जिला एमसीबी (छ.ग.) का पत्र क्रमांक/क्यू/अति तह. वाचक/2025, नागपुर, 03 जनवरी 2025 द्वारा नागपुर-चिरमिरी रोड हाल्ट 17 कि.मी. रेल परियोजना में प्रस्तावित ग्राम खैरबना तहसील मनेन्द्रगढ़ स्थित भूमि मूल खसरा नं. 292 के संबंध हल्का पटवारी प.ह.न. 08 के माध्यम से जांच प्रतिवेदन इस कार्यालय को प्राप्त हुआ है। प्राप्त प्रतिवेदन अनुसार उक्त मूल खसरा 292 में वर्तमान एवं मिसल वर्ष 1944-45 के रकबे में भिन्नता पायी गई है तथा उक्त प्रतिवेदन के आधार पर रकबा में सुधार किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूमि के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा आपत्ति पेश करना है, तो 30 जनवरी 2025 तक पेश कर सकता है।

कचरे से बनेगी सीएनजी जैसी गैस

बिलासपुर समेत 6 शहरों में लगेंगे बायोगैस प्लांट, 600 करोड़ का होगा निवेश

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में नगरीय कचरे की सफाई की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। बीपीसीएल और गेल इंडिया लिमिटेड मिलकर प्रदेश में कुल 600 करोड़ रुपए का निवेश करेंगे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और उपमुख्यमंत्री अरुण साव की उपस्थिति में शुक्रवार को सीएम हाउस में एक महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस परियोजना के तहत बिलासपुर, राजनांदगांव, धमतरी, अंबिकापुर, कोरबा और रायगढ़ में कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट (सीबीजी) स्थापित किए जाएंगे।

बिलासपुर में 60 करोड़ रुपए का निवेश: भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) अकेले बिलासपुर में 60 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। कंपनी को नगर निगम द्वारा कछार क्षेत्र में 10 एकड़ जमीन दी जाएगी, जिसके लिए कंपनी प्रतिवर्ष 27 लाख रुपए का किराया देगी।

बिलासपुर नगर निगम प्रतिदिन 150 टन गीला कचरा उपलब्ध कराएगा, जिससे 8 से 10 टन कंप्रेस्ड बायोगैस का उत्पादन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में कुल 600 करोड़ रुपए का निवेश: इस प्रोजेक्ट में बीपीसीएल और गेल इंडिया लिमिटेड मिलकर छत्तीसगढ़ में कुल 600 करोड़ रुपए का निवेश करेंगे। यह परियोजना न केवल कचरे के वैज्ञानिक निपटान में मदद करेगी, बल्कि नगर निगमों को खाद बनाने की प्रक्रिया में होने वाले लाखों रुपए के खर्च से भी बचाएगी।

समझौते पर हुआ हस्ताक्षर: इस समझौते पर छत्तीसगढ़ बायोफ्यूल विकास प्राधिकरण रायपुर, बीपीसीएल मुंबई, गेल इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली के अधिकारियों और बिलासपुर नगर निगम के कमिश्नर अमित कुमार की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए।

तस्करी के लिए बीजेपी नेता की फर्जी नेमप्लेट का इस्तेमाल

73 किलो गांजा के साथ 5 तस्कर गिरफ्तार, 21.68 लाख का माल जब्त

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही (एजेंसी)। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में पुलिस ने 5 गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने तस्करी किए जाने वाले कार में भाजपा नेता की फर्जी नेम प्लेट का इस्तेमाल किया था। मामले में दो आरोपी अभी भी फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है। जानकारी के मुताबिक, मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने भनवारटंक रोड के जोबाटोला के पास से दो कारों में तस्करी किए जा रहे 73 किलो गांजे के साथ आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

कार में फर्जी नेम प्लेट का इस्तेमाल: एडिशनल एसपी ओम चंदेल ने बताया कि, तस्करों ने पुलिस को चकमा देने के लिए एक कार पर भाजपा नेता की फर्जी नेम प्लेट लगा रखी थी। आरोपी उड़ीसा से गांजा लेकर अनूपपुर की ओर जा रहे थे। पुलिस ने मौके से दो कारें और गांजा समेत कुल 21 लाख 68 हजार 840 रुपए का माल जब्त किया है।

सूचना के बाद की गई कार्रवाई: पुलिस को बिलासपुर की तरफ से पेंड्रा की ओर आ रही दो संदिग्ध कारों की सूचना मिली थी। इस पर उच्च अधिकारियों को सूचित कर तत्काल कार्रवाई की गई। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

प्रधानमंत्री आवास योजना से सपना हो रहा साकार, जीवन में आ रहा है बड़ा बदलाव

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ राज्य के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देश में तेजी से होता नज़र आ रहा है। योजनाओं का क्रियान्वयन नगर निगम चिरमिरी क्षेत्र के पात्र हितग्राहियों को इसका पुरजोर लाभ मिल रहा है। योजना के तहत कलेक्टर एमसीबी एवं प्रशासक नगर निगम चिरमिरी डी. राहुल वेंकट के मार्गदर्शन तथा नगर निगम के आयुक्त रामप्रसाद आचला योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु संबंधित अधिकारियों को लगातार आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे हैं। इसी कड़ी में चिरमिरी के वार्ड क्रमांक- 06 स्वामी दयानंद वार्ड की निवासी जेगेशिया बाई ने बताया कि वह गरीब परिवार में दो बच्चों के साथ अपना जीवन-यापन बहुत ही मुश्किल से करती थी। उनका कच्चा मकान होने के कारण बारिश के मौसम में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था जेगेशिया बाई के पास कोई रोजगार भी नहीं है। वे मजदूरी का काम करके अपने 02 बच्चों का भरण-पोषण करती है। हितग्राही जेगेशिया बाई ने बताया कि पड़ोसियों की मदद से नगर निगम चिरमिरी में प्रधानमंत्री आवास हेतु उन्होंने आवेदन किया। कुछ ही दिनों में उनका आवेदन स्वीकृत हो गया और 06 माह के भीतर उन्हें पक्का मकान सरकार के द्वारा प्रदान किया गया। जेगेशिया बाई ने बताया कि मैं गरीब और लाचार परिवार से हूं। पक्का मकान बनाने हेतु मेरे पास आमदनी नहीं है, लेकिन केंद्र व राज्य सरकार के द्वारा मुझे प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पक्का मकान उपलब्ध कराया गया। जिससे मेरे जीवन में एक बड़ा बदलाव आया। उन्होंने केंद्र के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का हृदय से आभार प्रकट किया है।

पत्नी की पीट-पीटकर हत्या, 2 दिन घर में पड़ी रही लाश

10 महीने की बच्ची को लेकर भागा, औलाद नहीं होने पर लिया था गोद

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में मामूली विवाद में पति ने लाठी-डंडे से पीट-पीटकर पत्नी को मार डाला। इसके बाद आरोपी पति गोद ली 10 माह की बेटी को लेकर भाग निकला। लाश 2 दिन तक घर में ही पड़ी रही। घटना कोटा थाना क्षेत्र की है।

थाना प्रभारी राज सिंह ने बताया कि ग्राम सलका निवासी मैकू धनवार (45 साल) रोजी-मजदूरी करता है। सोमवार 13 जनवरी को वह घर पर पत्नी के साथ था। इसी दौरान रात में उसका पत्नी समुद्री बाई (43 साल) से किसी बात को लेकर विवाद हुआ।

टमाटर मांगने पहुंचा पड़ोसी, तो उड़े होश: उस रात गाली-गलौज की आवास पड़ोसियों ने भी सुनी। थोड़ी देर बाद आवाज आनी बंद हो गई। जिसके बाद पड़ोसियों ने भी ध्यान नहीं दिया। इसके दूसरे दिन मंगलवार की शाम पड़ोस में रहने वाला व्यक्ति उसके घर टमाटर मांगने के लिए गया। तब मकान बाहर से बंद था। दरवाजा खोलकर उसने अंदर झांककर देखा तो महिला की लाश खून से लथपथ पड़ी थी।

लाश देखकर पड़ोसी डरकर अपने घर चला गया। बुधवार की सुबह उसने गांव के सरपंच को घटना की जानकारी दी। सरपंच की सूचना पर पुलिस की टीम गांव पहुंची। पूछताछ के बाद पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम कराया है।

10 माह की बेटी को लेकर फरार हुआ पति: थाना प्रभारी ने पूछताछ की, तब पता चला कि 2 दिन पहले रात में मामूली घरेलू विवाद हुआ था। तब उन्हें हत्या की जानकारी नहीं थी। जांच के दौरान महिला के सिर पर गंभीर चोट और घटना स्थल पर लाठी पड़ी हुई मिली।

पूछताछ में यह भी पता चला कि समुद्री बाई की 10 माह का बेटी भी थी। वारदात के बाद से मैकू अपनी बेटी को लेकर फरार हो गया है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। पुलिस के अनुसार आरोपी की गिरफ्तारी के बाद ही घटना का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

संतान नहीं होने पर साले की बेटी को लिया है गोद: पुलिस को गांव के लोगों ने बताया कि मैकू और समुद्री का शादी के कई साल तक बच्चा नहीं हुआ। इसके बाद समुद्री ने अपने भाई की बेटी को गोद लिया है। समुद्री के मायके वाले भी उसकी तलाश कर रहे हैं। ताकि, बच्ची को अपने पास रख सके। पुलिस की टीम उसके ठिकानों की जानकारी जुटा रही है।

राजस्व निरीक्षक 50 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

किसान को 3 महीने से लगवा रहा था चक्कर, एसीबी ने की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)। कांकेर जिले में एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने एक राजस्व निरीक्षक को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा है। दुर्गूकोंदल में तैनात राजस्व निरीक्षक संतोष टोप्पो को शुक्रवार को 50 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया।

महेंद्रपुर के किसान नरसिंह उयके ने अपनी 10 डिसमिल जमीन की डायवर्सन रिपोर्ट के लिए आवेदन किया था। राजस्व निरीक्षक ने रिपोर्ट तैयार करने के एवज में 50 हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी।

पीड़ित किसान पिछले तीन महीने से रिपोर्ट के लिए अधिकारी के चक्कर काट रहा था। परेशान होकर किसान ने जगदलपुर स्थित एंटी करप्शन ब्यूरो में शिकायत दर्ज कराई। इसी आधार पर एसीबी की टीम ने राजस्व निरीक्षक कार्यालय में छापा मारा और राजस्व निरीक्षक को रिश्वत की राशि के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया।

एसीबी ने आरोपी राजस्व निरीक्षक के कब्जे से 50 हजार रुपए की नकद राशि जब्त की है। विधिवत कार्रवाई के बाद आरोपी को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। यह कार्रवाई राज्य में भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रहे अभियान का हिस्सा है।

निगम कमिश्नर ने शहर की व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने निगम टीम के साथ पार्क का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव के निर्देशानुसार, कलेक्टर एमसीबी व प्रशासक नगर निगम चिरमिरी डी.राहुल वेंकट के मार्गदर्शन में आयुक्त नगर निगम चिरमिरी रामप्रसाद आचला ने शहर की व्यवस्थाओ को दुरुस्त करने प्रतिदिन की भांति शुक्रवार की सुबह भी अपने निगम टीम के साथ चिरमिरी शहर के राजीव गांधी पार्क, बी.टाईप गोदरीपारा पार्क, आज़ादनगर पार्क, सहित हल्दीबाड़ी 06 नंबर गोलाई के पास लैंड स्पेकिंग का जायज़ा लिया।

निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने गार्डन के रख रखाव, साफ़-सफ़ाई, लाईटिंग प्रबंध पौधारोपण सुव्यवस्थित करने सहित अन्य कार्यों पर सतत मॉनिटरिंग कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए. आयुक्त ने बच्चों के स्वस्थ मनोरंजन हेतु झूलों के रख रखाव, पार्क की सुंदरता निखरने के लिए बनाए गए फव्वारो को बेहतर बनाने, म्युजिकल फाउंडेशन, पार्क की सुरक्षा, लैंड स्पेकिंग का रख रखाव साफ़-सफ़ाई सहित समुचित प्रबंध करने अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। आयुक्त आचला ने बताया कि पार्क के तालाब को स्वच्छ बनाने निरंतर स्वच्छता व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने पार्क का अधिकाधिक जनोपयोगी बनाकर आमजनों को स्वच्छ वातावरण में परिवेश देने हर सम्भव जनहित जनसुविधा देना ही प्राथमिकता है।

इस दौरान सहायक अभियंता विजय बधावन, जे. ई. निगम विक्टर वर्मा, स्वच्छता प्रभारी उमेश तिवारी, ज़िला समन्यवक (पीआईयु) प्रवीण सिंह सहित समस्त टाईम कीपर मौजूद रहे।

महाकुंभ में सिर्फ आधार कार्ड दिखाने पर मिलेगा बेड

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। महाकुंभ 2025 मेले में जाने वाले छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं के लिए खास इंतजाम किए गए हैं। महाकुंभ मेला स्थल में फ्री रहने खाने की व्यवस्था की गई है। पवेलियन में सिर्फ आधार कार्ड दिखाने से बेड की सुविधा मिलेगी। जहां आप आराम से रह सकते हैं।

संसद के बजट सत्र का पहला भाग 31 जनवरी से 13 फरवरी के बीच होने की संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के बजट सत्र का पहला भाग 31 जनवरी से 13 फरवरी के बीच होने की संभावना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी को लगातार आठवां बजट पेश कर सकती है। परंपरा के अनुसार सत्र की शुरुआत 31 जनवरी को लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संबोधन से होगी। इसके बाद इकोनॉमिक सर्वे पेश किया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक सत्र का दूसरा भाग 10 मार्च से 4 अप्रैल के बीच बुलाया जा सकता है। सत्र के पहले भाग में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर दोनों सदनों में बहस होगी और संसद के दोनों सदनों में प्रधानमंत्री के जवाब के साथ सत्र का समापन होगा।

शादी से मना करना सुसाइड के लिए उकसाना नहीं

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर स्थित बेंच ने बुधवार को महिला को सुसाइड के लिए उकसाने के मामले में फैसला दिया। कोर्ट ने कहा- सिर्फ इसलिए कि पुरुष ने रिलेशनशिप को खत्म कर दिया और फिर महिला ने सुसाइड कर लिया तो शख्स पर सुसाइड के लिए उकसाने का मामला दर्ज नहीं किया जा सकता। जस्टिस उर्मिला जोशी-फाल्के ने ऐसे ही मामले में 26 वर्षीय युवक को बरी किया। उस पर एक महिला को सुसाइड के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया गया था। जिसके साथ वह 9 साल से रिलेशनशिप में था। उसने इस मामले में बुलढाणा जिले के खामगांव सेशन कोर्ट के बरी नहीं करने के फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। जज ने कहा- जांच में कहीं भी ये नहीं है कि शख्स ने मृतक महिला को सुसाइड करने के लिए उकसाया था। सबूतों से पता लगा है कि ब्रेकअप के बाद भी दोनों के बीच बातचीत जारी थी। अगर शख्स ने उससे शादी करने से मना कर दिया था तो यह महिला को सुसाइड करने के लिए उकसाने या उसके बराबर नहीं होगा।

तमिलनाडु में जल्लीकट्टू से 1 दिन में 7 की मौत

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के अलग-अलग जिलों में गुरुवार को पोंगल के मौके पर आयोजित जल्लीकट्टू त्योहार में 7 लोगों की मौत हुई। बैल को भीड़ के बीच छोड़कर दौड़ाने वाले इस खेल में एक ही दिन में करीब 400 से ज्यादा लोग घायल हुए। तमिलनाडु पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि गुरुवार को कान्नुम पोंगल दिवस था। इस दिन जल्लीकट्टू सबसे ज्यादा खेला जाता है। 7 लोगों के अलावा पुडुक्कोट्टाई और शिवगंगा में 2 बैलों की भी मौत हुई है। जान गंवाने वाले ज्यादातर लोग खेल में भाग लेने वाली नहीं थे, बल्कि बैल के मालिक और दर्शक थे पुलिस ने बताया कि 1 शख्स की मौत शिवगंगा जिले के सिरवायल मंजुविरट्टू में मौत हो गई। वह इस खेल में भाग लिया था। वहीं, मदुरै के अलंगनल्लूर में खेल देखने आए दर्शक को सांड ने घायल कर दिया। अस्पताल में उसकी मौत हो गई।

मुख्यमंत्री ने पैरालम्पिक खिलाड़ी रूबीना और कपिल को अर्जुन अवॉर्ड 2024 से सम्मानित होने पर दी बधाई

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के पैरा शूटर खिलाड़ी रुबीना फ्रांसिस एवं जूडो खिलाड़ी कपिल परमार को देश के प्रतिष्ठित अर्जुन अवॉर्ड 2024 से सम्मानित होने पर हार्दिक बधाई दी है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को नई दिल्ली में जबलपुर की पैरालंपिक खिलाड़ी रूबीना फ्रांसिस और सीहोर के पैरा जूडो खिलाड़ी कपिल परमार को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दोनों खिलाड़ियों की इस उपलब्धि से प्रदेश और देशवासी गौरवान्वित हुए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से प्रदेश के खिलाड़ियों को इसी तरह प्रदर्शन तथा प्रतिभा से नए कीर्तिमान स्थापित करने की प्रार्थना की है।

दिल्ली में फिलहाल आयुष्मान योजना लागू नहीं होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को दिल्ली हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें आम आदमी पार्टी सरकार को आयुष्मान भारत मिशन लागू करने के लिए 5 जनवरी तक केंद्र के साथ स्न्न्श्व साइन करने कहा गया था। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस एजी मसीह की बेंच ने दिल्ली सरकार की याचिका पर केंद्र सरकार को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। 24 दिसंबर को दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा था कि दिल्ली के लोगों को सुविधाओं से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए योजना को पूरी तरह से लागू करना होगा। दिल्ली सरकार ने इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। दिल्ली सरकार राज्य में आयुष्मान भारत योजना लागू करने को लेकर केंद्र के साथ टकराव में रहा है। केंद्र सरकार इसे 33 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लागू कर चुकी है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना देश का सबसे बड़ा घोटाला है।

सैफ अली पर हमला- जिसे पकड़ा, वह आरोपी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक्टर सैफ अली खान पर हमले के केस में जिस संदिग्ध को पूछताछ के लिए बांद्रा पुलिस स्टेशन लाया गया था, उसका केस से कोई लेना देना नहीं है। मुंबई पुलिस ने शुक्रवार दोपहर को यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि इस केस में अब तक किसी को हिरासत में नहीं लिया गया है।

इससे पहले सुबह करीब 11 बजे न्यूज एजेंसी-ह्लढ्ढ ने बताया गया था कि सैफ अली खान पर हमले के संदिग्ध को पुलिस पूछताछ के लिए लाई है। इसका

नाम शाहिद बताया गया था। कहा गया था कि उस पर पहले से ही हाउस ब्रेक के 5 केस दर्ज हैं।

उधर, मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 14 जनवरी की रात 2 बजकर 42 मिनट पर शाहरुख खान के घर के बाहर एक व्यक्ति घर की रेकी करते दिखाई दिया। वह लोहे की सीढ़ी लगाकर झांकने के कोशिश कर रहा था।

हालांकि, बंगले की रेकी के मामले में मुंबई बांद्रा के जोनल डीसीपी का कहना है कि अब तक इस बारे में कुछ भी सामने नहीं आया है। साथ ही डीसीपी ने लोगों से अफवाह न फैलाने की अपील की है।

ऑटो ड्राइवर भजन सिंह ने बताया, %रात में मैं गाड़ी चला रहा था। सतगुरु बिल्डिंग के सामने से किसी ने आवाज लगाई। रिक्शा, रिक्शा। मैंने ऑटो गेट के पास रोका।

छत्तीसगढ़-तेलंगाना बॉर्डर में सुरक्षाबलों ने 12 नक्सली मार गिराए

जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़-तेलंगाना बॉर्डर पर सुरक्षाबलों ने 12 नक्सलियों को मार गिराया है। सभी माओवादियों के शव लेकर जवानों की एक टीम कोंडापल्ली पहुंची। घटनास्थल से भारी मात्रा में हथियार भी मिले हैं। इलाके में सर्चिंग अब भी जारी है।

इधर नारायणपुर में नक्सलियों की लगाई (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) की चपेट में आकर दो (बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स) जवान घायल हो गए हैं। दोनों का इलाज जारी है। इससे पहले गुरुवार को बीजापुर में भी ढ्ढश्वष्ठ ब्लास्ट की चपेट में आने से 2 जवान घायल हुए थे। बीजापुर के पुजारी कांकेर में गुरुवार दिनभर मुठभेड़ चली। दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा के करीब 1500 से ज्यादा जवान ऑपरेशन पर निकले थे। बस्तर आईजी सुंदरराज पी ने इसकी पुष्टि की है। पुलिस को इनपुट मिले थे कि, पामे? इलाके में भारी संख्या में नक्सली मौजूद हैं। सूचना के आधार पर 3 जिलों से डीआरजी, कोबरा 205, 206, 208, 210 बटालियन के जवानों समेत सीआरपीएफ की टीम को 2 दिन पहले सर्च ऑपरेशन के लिए निकाला गया था। नक्सलियों की सेंट्रल कमेटी और बटालियन नंबर 1 के साथ जवानों की मुठभेड़ हुई।

दिल्ली में कोहरे से 117 फ्लाइट, 27 ट्रेनें लेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के उत्तरी राज्यों में बर्फबारी के साथ-साथ घने कोहरे का भी असर लगातार बना हुआ है। शुक्रवार सुबह 18 राज्यों में कोहरे के कारण विजिबिलिटी घटी। दिल्ली में 117 से ज्यादा फ्लाइट लेट हुईं। वहीं, 10 कैंसिल की गई। दिल्ली आने वाली 27 ट्रेनें भी अपने निर्धारित समय पर नहीं पहुंची सकीं।

हिमाचल प्रदेश के ऊंचे पहाड़ फिर बर्फबारी से सफेद हो गए हैं। 3 नेशनल हाईवे समेत 200 सड़कें बंद हैं। अकेले शिमला में ही 56

सड़कें बंद हुईं और एचआरटीसी की 15 बसें बर्फबारी में फंसी हैं। मौसम विभाग ने कहा कि यहां आज भी बर्फबारी होगी।

मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी तापमान में लगातार गिरावट हो रही है। दोनों राज्यों के 20 शहरों में तापमान 10 डिग्री से नीचे बना हुआ है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी से बर्फीली हवाएं चलेंगी, जिससे इन राज्यों में भी तापमान गिरेगा।

सांसद रवि किशन ने संगम में डुबकी लगाई

प्रयागराज (एजेंसी)। भाजपा सांसद रवि किशन आज महाकुंभ पहुंचे। उन्होंने पूजा-अर्चना कर संगम में डुबकी लगाई। नाव पर बैठकर सैर भी की। उन्होंने कहा अखिलेश यादव को भी यहां आकर स्नान करना चाहिए। जिससे उन्हें सनातन संस्कृति की बेहतर समझ मिल सके। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी महाकुंभ में आएंगे। संगम में स्नान कर साधु-संतों से आशीर्वाद लेंगे। दोनों नेता कांग्रेस के सेवा दल के शिविर में आएंगे। सेवादल से जुड़े एक पदाधिकारी ने बताया- राहुल के कार्यक्रम का शेड्यूल अभी नहीं आया है।

दिल्ली चुनाव, भाजपा का संकल्प पत्र जारी

नई दिल्ली(एजेंसी)। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने कहा कि दिल्ली में भाजपा सरकार बनने पर मौजूदा सरकार की सभी योजनाएं जारी रहेंगी।

भाजपा ने शुक्रवार को दिल्ली चुनाव के लिए पार्टी का संकल्प पत्र जारी किया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने संकल्प पत्र को %विकसित दिल्ली की नींव% बताया।

उन्होंने दिल्ली में महिलाओं को हर महीने 2500 रुपए, गरीब महिलाओं को सिलेंडर पर 500 रुपए की सब्सिडी देने का वादा किया। होली-दीवाली पर एक-एक मुफ्त

सिलेंडर देने का भी ऐलान किया।

उन्होंने कहा कि मातृ सुरक्षा वंदना योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को 21,000 रुपए दिए जाएंगे और 6 पोषण किट भी दी जाएंगी। दिल्ली में बिजली, बस और पानी को लेकर मौजूदा सरकार की जो योजनाएं चल रही हैं, वह जारी रहेंगी। नड्डा ने बताया कि 60-70 साल के बुजुर्गों के मिलने वाली पेंशन ?2000 से बढ़ाकर ?2500 की जाएगी। विधवा, दिव्यांगों और 70 साल से ऊपर के बुजुर्गों को ?3000 रुपए पेंशन मिलेगी।

दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ियों में अटल कैंटीन योजना के तहत गरीबों को 5 रुपए में पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाएगी।

उधर, अरविंद केजरीवाल ने भाजपा के संकल्प पत्र को झूठ का पुलिंदा बताया।

कंगना की फिल्म इमरजेंसी का विरोध

अमृतसर (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्टर एवं हिमाचल के मंडी से भाजपा सांसद कंगना रनोट की फिल्म इमरजेंसी शुक्रवार को रिलीज हो गई है। लेकिन पंजाब में सिख संगठन इसके विरोध में उतर आए हैं। अमृतसर, जालंधर, लुधियाना और मोहाली में थिएटर्स के बाहर सिख संगठनों के सदस्य काले झंडे लेकर विरोध कर रहे हैं। यहां पुलिस तैनात है।फिलहाल किसी भी थिएटर में फिल्म दिखाई नहीं जा रही है। सभी शो रोक दिए गए हैं। पीवीआर ग्रुप के 70 से 80 थिएटरों पर ये फिल्म दिखाई जानी थी, विरोध के बाद इन थिएटरों पर फिल्म लगी ही नहीं। लॉ स्टूडेंट सफल हरप्रीत सिंह की तरफ से कंगन को कानूनी नोटिस भेजा गया है।

गडकरी बोले- खराब रोड बनाना गैर-जमानती अपराध होना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडस्ट्री बॉडी सीजेआई की तरफ से आयोजित एक इवेंट में गडकरी ने कहा कि सड़क हादसों में भारत दुनिया में नंबर 1 है। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गुरुवार को कहा कि गलत सड़क बनाना नॉन-बेलेबल ऑफेंस यानी गैर-जमानती अपराध बना देना चाहिए। रोड एक्सीडेंट के लिए रोड कॉन्ट्रैक्टरों और इंजीनियरों को जिम्मेदार ठहराना चाहिए

और जेल भेजना चाहिए। इंडस्ट्री बॉडी सीजेआई की तरफ से आयोजित एक इवेंट में गडकरी ने कहा कि सड़क हादसों में भारत दुनिया में नंबर 1 है। हमारा लक्ष्य है कि 2030 तक सड़क हादसों में मरने वाले लोगों की संख्या को आधा किया जा सके। गडकरी ने बताया कि मिनिस्ट्री के डेटा के मुताबिक 2023 में पांच लाख सड़क हादसे हुए जिनमें 1.72 लाख मौतें हुईं।

इनमें से 66.4त्न यानी 1.14 लाख लोग 18 से 45 साल की उम्र के थे, जबकि 10 हजार लोग बच्चे थे। 55 हजार मौतें हेलमेट न पहनने के कारण और 30 हजार मौतें सीट बेल्ट न लगाने के कारण हुईं। गडकरी ने यह भी कहा कि हाईवे मंत्रालय हाईवे पर ब्लैक स्पॉट को हटाने के लिए 40 हजार करोड़ रुपए खर्च कर रहा है। उन्होंने इंडस्ट्री और बाकी स्टेकहोल्डर्स से अपील की कि वे सरकार के साथ मिलकर ड्राइवर ट्रेनिंग और फिटनेस सेंटर बनाएं, ताकि देश में ड्राइवरों की कमी को दूर किया जा सके।

राहुल गांधी दिल्ली एम्स के बाहर मरीजों से मिले

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी गुरुवार देर रात दिल्ली में एम्स के बाहर मरीजों से मिले। राहुल ने मरीजों से उनका हाल-चाल जाना। साथ ही जिन दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा, उसके बारे में पूछा। राहुल ने सोशल मीडिया पर कई तस्वीरें शेयर कीं और लिखा- बीमारी का बोझ, ठिठुराने वाली सर्दी, और सरकारी असंवेदनशीलता - आज एम्स के बाहर उन मरीजों और उनके परिवारों से मिला, जो दूर-दराज से इलाज की आस में आए हैं। इलाज की राह में वो सड़कों, फुटपाथ और सब-वे पर सोने को मजबूर हैं - ठंडी जमीन, भूख, और असुविधाओं के बीच भी बस उम्मीद की एक लौ जलाए बैठे हैं। केंद्र और दिल्ली सरकार दोनों, जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह से नाकाम रही हैं।

सुरक्षा चूक पर 25 किसानों के गिरफ्तारी वारंट, पुलिस ने हत्या की कोशिश की धारा जोड़ी

फिरोजपुर (एजेंसी)। पंजाब में पीएम नरेंद्र मोदी की सुरक्षा चूक का मामला 3 साल बाद फिर सुर्खियों में आ गया है। कोर्ट ने इस मामले में 25 किसानों का गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। जिसमें हत्या की कोशिश की धारा भी जोड़ दी गई है। इसका पता तब चला, जब किसानों को इस बारे में समन जारी किए गए। जिससे खुलासा हुआ कि 5 जनवरी 2022 के 3 साल पुराने सुरक्षा चूक मामले में पुलिस ने अब आईपीसी की धारा 307, 353, 341, 186, 149 और नेशनल हाईवे एक्ट की धारा

8-बी भी जोड़ दी है।

पहले यह केस सार्वजनिक रास्ता रोकने के मामले में धारा 283 के तहत दर्ज हुआ था। बता दें कि सुरक्षा चूक के दिन प्रधानमंत्री को फिरोजपुर में एक रैली को संबोधित करना था। इसके अलावा शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को श्रद्धांजलि देने के लिए हुसैनीवाला स्मारक भी जाना था। पहले उन्हें हेलिकॉप्टर से जाना था, लेकिन मौसम की खराबी की वजह से उन्हें सड़क मार्ग से ले जाया गया।

अनशन पर बैठे डल्लेवाल का वजन 20 किलो घटा

चंडीगढ (एजेंसी)। पंजाब और हरियाणा के खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल 53 दिन से आमरण अनशन पर बैठे हैं। किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ के मुताबिक डल्लेवाल का वजन 20 किलो कम हो गया है। जब वे आमरण अनशन पर बैठे थे, तब उनका वजन 86 किलो 950 ग्राम था, जबकि अब यह घटकर 66 किलो 400 ग्राम रह गया है। वहीं, डल्लेवाल के समर्थन में खनौरी बॉर्डर पर 111 लोगों के आमरण अनशन को आज 3 दिन हो गए हैं। एक दिन पहले प्रशासन व पुलिस के अधिकारी डल्लेवाल से मिलने पहुंचे थे। डल्लेवाल की लेटेस्ट मेडिकल रिपोर्ट के मुताबिक किडनी और लिवर से संबंधित टेस्ट का रिजल्ट 1.75 है, जो सामान्य परिस्थितियों में 1 से भी कम होना चाहिए। किसान नेताओं ने बताया कि सरकार जानबूझकर सुप्रीम कोर्ट को

उन टेस्ट के रिजल्ट बताती है, जिनमें गिरावट आने में ज्यादा समय लगता है। किसान नेताओं ने कहा कि हमें यह देखकर हैरानी हुई कि पंजाब सरकार के वकील सुप्रीम कोर्ट में कहते हैं कि जगजीत सिंह डल्लेवाल की तबीयत में सुधार हो रहा है। किसान नेताओं ने पूछा कि आमरण अनशन पर बैठने से सेहत सुधरती है या बिगड़ती है? उन्होंने कहा कि अगर अनशन पर बैठने से सेहत सुधरती है तो देशभर के अस्पताल बंद करके बीमार लोगों को अनशन पर बैठा देना चाहिए ताकि उनकी सेहत सुधर सके।

विराट-अनुष्का ने अलीबाग में खरीदा करोड़ों का लग्जरी बंगला

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली मौजूदा समय में लंदन में रहते हैं लेकिन भारत में उनके अलग-अलग शहरों में कई घर हैं। वहीं इन दिनों विराट और अनुष्का ने एक आलिशान बंगला खरीदा है। जो की काफी चर्चा में है। दरअसल,इस कपल ने अलीबाग में करोड़ों का घर खरीदा है जो की मुंबई की भीड़-भाड़ से कई दूर है। कोहली के इस घर को नेचर के हिसाब से बनाया गया है। इसमें स्विमिंग पूल, शानदार लिविंग रूम और बाकी जगहों को कोहली ने खुद एक वीडियो के जरिए दिखाया है। अलीबाग में मौजूद इस आलीशान घर को विराट-अनुष्का ने करोड़ों में खरीदा है। विराट ने एक वीडियो में इस घर की खासियतों के बारे में बताया है और जिन जगहों पर वो अपनी फैमिली के साथ रिलैक्स करेंगे उन तस्वीरों को भी दिखाया गया है। वीडियो में घर के अंदर का नजारा ऐसा है जिसे देखकर हर कोई हैरान रह जाएगा। आर्किटेक्चुअल डायजेस्ट इंडिया के यूट्यूब चैनल पर कुछ महीने पहले एक वीडियो शेयर किया गया था। इसमें विराट कोहली एक बंगला दिखा रहे हैं जिसके फीचर्स भी वो इस वीडियो में बताते दिख रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक,अनुष्का शर्मा और विराट कोहली के इस घर की कीमत 35 करोड़ रुपये है। जिस घर में उन्हें हर तरह की सुविधा दी गई है और इसमें कई टेक्नोलॉजी का भी इस्तेमाल किया गया है। जिससे विराट की फैमिली सुरक्षित रह सके।

विराट कोहली नहीं खेल पाएंगे रणजी ट्रॉफी मुकाबला! गर्दन में आई मोच

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टीम इंडिया के फ्लॉप शो के बाद स्टार खिलाड़ी रोहित शर्मा और विराट कोहली के रणजी ट्रॉफी के दूसरे राउंड में खेलने की उम्मीद थी। हालांकि, दोनों ही खिलाड़ियों ने अपने-अपने बोर्ड को खेलने को लेकर कोी जानकारी नहीं दी है। रणजी ट्रॉफी के दूसरे राउंड का आगाज 23 जनवरी से होने जा रहा है। हालांकि, विराट कोहली के घरेलू मुकाबला खेलने पर संश्य और बढ़ गया है। दरअसल, ञ्ह्ल्ढ्ढ के मुताबिक विराट कोहली की गर्दन में मोच आई है, जिसके लिए उन्होंने इंजेक्शन भी लिया है। 23 जनवरी से दिल्ली को सौराष्ट्र के खिलाफ अपना अगला मुकाबला खेलना है, उनकी खेलने पर सस्पेंस बढ़ गया है। हालांकि, दिल्ली एंव जिा क्रिकेट संघ का कहना है कि उन्हें अभी तक कोई अपडेट नहीं मिला है। टाइम्स ऑफ इंडिया के हवाले से एक सूत्र ने बताया कि संभवाना है कि वह बचे हुए दो रणजी ट्रॉफी मैचों में से पहले मैच को छोड़ दें और अगर डीडीसीए चयनकर्ताओं को अपडेट दिया जाता है तो तस्वीर साफ हो सकती है। फिलहाल, कोहली के किसी न किसी स्तर पर दिल्ली की टीम में शामिल होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है और अगर वह सौराष्ट्र के खिलाफ मैच शुरू होने से पहले राजकोट में टीम के साथ ट्रेनिंग करते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा। दिल्ली की टीम 20 जनवरी को रवाना होगी और मैच शुरू होने से पहले दो ट्रेनिंग सेशन में हिस्सा लेगी।

ये दिग्गज बनना चाहता है टीम इंडिया का नया बैटिंग कोच

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को टीम इंडिया के लिए एक बल्लेबाजी कोच की जरूरत है। जिसके बाद बोर्ड ने वेकेंसी भी निकाली है। इस वेकेंसी को देखते हुए इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने टीम इंडिया के बल्लेबाजी कोच बनने में दिलचस्पी जताई है। बता दें कि, वहीं पिछले साल टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद राहुल द्रविड़ का बतौर हेड कोच कार्यकाल खत्म हो गया। जिसके बाद उनकी जगह गौतम गंभीर हेड कोच बने। गौतम गंभीर के साथ अभिक नायर टीम इंडिया के असिस्टेंट कोच बने, जबकि साउथ अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज मौर्न मोर्कल गेंदबाजी कोच के रुप में जुड़े। टी दिलीप टीम इंडिया के फील्डिंग कोच बने हे, जबकि रेयान टेन डेशखाटे को टीम इंडिया का दूसरा असिस्टेंट कोच बनाया गया। द्रविड़ के कार्यकाल में विक्रम राठौर टीम इंडिया के बल्लेबाजी कोच थे, जबकि पारस म्हाम्ब्रे बॉलिंग कोच। गंभीर के कार्यकाल में टीम इंडिया का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। सोशल मीडिया पर टीम इंडिया के नए बैटिंग कोच की तलाश को लेकर कई गई एक पोस्ट के जवाब में केविन पीटरसन ने लिखा कि, (उपलब्ध), भारतीय टीम का प्रदर्शन पिछळे कुछ समय में बॉलिंग में पूरी तरह से जसप्रीत बुमराह पर निर्भर रहा है, वहीं बैटिंग में यशस्वी जायसवाल के अलावा कोई और बैटर कुछ खास नहीं कर पा रहा है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मनु भाकर समेत 4 खिलाड़ियों को किया खेल रत्न से सम्मानित

नई दिल्ली (एजेंसी)। शुक्रवार, 17 जनवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारतीय खेल जगत के सितारों को खेल रत्न और अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया। राष्ट्रपति भवन में आयोजित राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति ने निशानेबाज मनु भाकर, चेस चैंपियन डी गुकेश को ध्यानचंद खेल रत्न अवॉर्ड से सम्मानित किया। वहीं इसके अलावा भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह और पैरा एथलीट प्रवीण कुमार को भी खेल के क्षेत्र में उनके अहम योगदान को इसी अवॉर्ड से नवाजा। राष्ट्रपति ने इसी कड़ी में 32 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कर से भी सम्मानित किया। वहीं राष्ट्रपति मुर्मू ने अर्जुन पुरस्कार, राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार और मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्रॉफी के विजेताओं को भी सम्मानित किया। वहीं अर्जुन अवॉर्ड पाने वाले खिलाड़ियों में भारत के पहले पैरालंपिक गोल्ड मेडलिस्ट मुरलीकांत पेटकर भी शामिल हैं, जिन्हें 1972 पैरालंपिक में 50 मीटर

फ्रीस्टाइल तैराकी में गोल्ड मेडल मिला था। बता दें कि, मनु भाकर ने पिछले साल पेरिस ओलंपिक में इतिहास रचा था। उन्होंने 10 मीटर एयर पिस्टल विमेंस और 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम स्पर्धा में ब्रान्ज मेडल जीता था। वह एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं। जबकि 18 वर्षीय डी गुकेश ने पिछले महीने चीन के डिंग लिरेन को हराकर सबसे कम उम्र में वर्ल्ड चैंपियन बनने का कारनामा किया। विश्वनाथन आनंद के बाद वह ऐसा करने वाले दूसरे भारतीय हैं।

दूसरी तरफ पेरिस ओलंपिक में हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी में भारतीय हॉकी टीम ने बैक टू बैक दूसरे ओलंपिक में भारत को ब्रान्ज मेडल दिलाया। साथ ही प्रवीण कुमार ने पेरिस पैरालंपिक 2024 में पुरुषों की हाई जंप-ञ्64 स्पर्धा में एशियाई रिकॉर्ड तोड़कर गोल्ड मेडल अपने नाम किया था। जिन 32 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड दिया गया है उसमें 17 पैरा एथलीट हैं।

कौन हैं सितांशू कोटक? जिन्हें बीसीसीआई ने टीम इंडिया का नया बल्लेबाजी कोच बनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। 22 जनवरी से भारत और इंग्लैंड के बीच टी20 सीरीज का आगाज होना है। इस सीरीज में भारतीय टीम के पास बल्लेबाजी कोच भी होगा। बीसीसीआई ने सौराष्ट्र के ऑलराउंडर सितांशू कोटक को इस घरेलू सीरीज के लिए बल्लेबाजी कोच चुना है। भारत को इंग्लैंड के खिलाफ पांच टी20 और तीन वनडे मैचों की सीरीज खेलनी है। इसकी शुरुआत 22 जनवरी से होगी।

सूत्र ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि, कोटक बतौर बल्लेबाजी कोच टीम इंडिया के साथ जुड़ेंगे। टीम इंडिया कोलकाता में तीन दिन का कैंप करेगी जिसके लिए खिलाड़ी 18 तारीख तक वहीं पहुंचेंगे। टीम इंडिया इस समय में मुख्य

कोच गौतम गंभीर, अभिषेक नायर (सहायक कोच), रेयान टेन डोएशेट (सहायक कोच), मोर्ने मार्केल (गेंदबाजी कोच) और टी दिलीप के साथ खेल रही है। अब इस दल में एक और एंट्री हो गई है।

फिलहाल, गुजरात में जन्मे सितांशु कोटक ने अपने करियर में कोई इंटरनेशनल मैच नहीं खेला है। उन्होंने लिस्ट ए के मुकाबलों में 42.33 के औसत से 3083 रन बनाए हैं। वह क्रिकेट की दुनिया में अपनी शानदार टेक्नीक के लिए जाने जाते हैं। सौराष्ट्र के इस खिलाड़ी ने 130 फर्स्ट क्लास मैच में उन्होंने 41.76 के औसत से 8061 रन बनाए हैं जिसमें 15 शतक लगाए हैं।

वहीं 9 टी20 मैचों में उनके नाम 133 रन है। कोटक घरेलू क्रिकेट में 11 हजार से ज्यादा रन बना चुके हैं। कोटक इससे पहले इंडिया ए के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने वीवीएस लक्ष्मण के साथ काम किया है। इंग्लैंड के दिग्गज खिलाड़ी ने भारत के बल्लेबाजी कोच बनने से दिलचस्पी दिखाई है।

फेक न्यूज फैलाने वालों पर भड़के जसप्रीत बुमराह

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को लेकर इन दिनों कई अफवाह आ रही हैं। कई रिपोर्ट में तो ये भी दावा किया जा रहा है कि बुमराह को बेड रेस्ट की सलाह दी गई है। अब इन तमाम मीडिया रिपोर्ट पर खुद बुमराह ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इस दौरान कहा कि फेक न्यूज फैलाना आसान है। इसका मतलब है कि बुमराह को बेड रेस्ट नहीं दिया गया है। बता दें कि हाल ही में ऑस्ट्रेलिया की सरजमीं पर खेली गई पांच टेस्ट मैचों की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 के आखिरी मुकाबले में बुमराह को बैक स्पाज्म हुआ था, जिसके बाद भारतीय गेंदबाज मैच के बीच में स्कैन के लिए गए थे। बुमराह ने इसके बाद मुकाबले में गेंदबाजी भी नहीं कराई थी। बुमराह के गेंदबाजी नहीं कराने से तरह-तरह की अटकलें लगनी शुरू हो गई थीं।

तमाम रिपोर्ट्स में तो ये भी दावा किया जा चुका है कि, बुमराह फरवरी-मार्च में खेली जाने वाली चैंपियंस ट्रॉफी भी मिस कर सकते हैं। हालांकि, बुमराह की चोट पर बीसीसीआई की तरफ से कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन खुद बुमराह ने जरूर सबकी क्लास लगा दी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बुमराह ने अपनी बेड रेस्ट वाली फैलती खबरों पर रिप्लाई करते हुए लिखा कि, मुझे पता कि फेक न्यूज फैलाना आसान है लेकिन इससे मुझे हंसी आती है।

रोहित शर्मा पाकिस्तानजाएंगे या नहीं, नए बीसीसीआई सचिव देवाजीत सैकिया ने दिया ये जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। कप्तान रोहित शर्मा को लेकर पिछले कुछ दिनों से अटकलें लगाई जा रही थी कि वो चैंपियंस ट्रॉफी टूर्नामेंट 2025 से पहले पाकिस्तान जाएंगे। जहां कप्तानों की बैठक में हिस्सा लेंगे। कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि रोहित शर्मा कम से कम एक बार पाकिस्तान जाएंगे, लेकिन अब इस मामले पर

बीसीसीआई ने अपनी चुप्पी तोड़ दी है। वहीं बीसीसीआई के नए सचिव देवाजती सैकिया ने कप्तानों की बैठक में रोहित के भाग लेने पर खुलकर बात की और दावा किया कि अभी तक उन्हें ऐसा कोई प्रस्ताव पीसीबी की तरफ से नहीं मिला है। टेलीग्राफ से बात करते हुए सैकिया ने बताया कि आईसीसी के साथ इस पर कोई चर्चा नहीं हुई है। इसका मतलब है कि रोहित शर्मा के चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जाने की संभावना कम है।

देवजीत सैकिया ने आगे कहा कि ऐसा कई प्रस्ताव नहीं मिला है और आईसीसी के साथ हमारी चर्चा में ये शामिल नहीं था। हालांकि, सैकिया ने कप्तानों की बैठक में रोहित शर्मा के हिस्सा लेने की पुष्टी नहीं की, लेकिन एक करीबी सूत्र ने इसे बहुत ही नाजुक स्थिति बताया और कहा कि इस मामले को काफी संभलकर हैंडल करने की जरूरत है क्योंकि पाकिस्तान इस टूर्नामेंट का मेजबान है। वैसे भारत अपने सभी मैच यूएई में खेलेगा और टीम इंडिया का पहला मैच बांग्लादेश के साथ 20 फरवरी को होगा।

पीटीआई के मुताबिक पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने पहले ही अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद को साफ कर दिया है कि चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का उद्घाटन समारोह पाकिस्तान से बाहर नहीं किया जाएगा। इस समारोह में सभी देशों के कप्तान शामिल होंगे। 29 साल के लंबे अंतराल के बाद पाकिस्तान में किसी आईसीसी इवेंट का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए पीसीबी भव्य समारोह की योजना बना रहा है।

संजू सैमसन ने की ईशान-अय्यर जैसी गलती

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज अगले महीने 19 फरवरी को होना है। इसके लिए सभी 8 टीमों में से 6 टीमों ने अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है। वहीं कहा जा रहा है कि, भारतीय टीम का ऐलान 19 जनवरी को किया जा सकता है। टीम सेलेक्शन से पहले विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। दरअसल, संजू सैमसन को चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर रखा जा सकता है। साथ ही उनपर बीसीसीआई एक्शन भी ले सकता है। बता दें कि, संजू का केरल क्रिकेट संघ के साथ कथित तौर पर विवाद हो गया था।

बता दें कि, संजू सैमसन ने विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 की शुरुआत से पहले केरल टीम के प्रैक्टिस कैम्प को जॉइन करने में अनुपलब्धता व्यक्त की थी। इसके चलते उन्हें विजय हजारे ट्रॉफी के लिए केरल की टीम में नहीं सेलेक्ट किया गया था। केसीए

सचिव विनोद एस कुमार ने कहा था कि एसोसिएशन नहीं चाहता कि सैमसन की उपलब्धता पर अनिश्चितता के कारण कोई युवा अपनी जगह खो दे।

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक बीसीसीआई के टॉप अधिकारी और चयनकर्ता सैमसन के विजय हजारे ट्रॉफी से बाहर रहने के फैसले से खुश नहीं है। बोर्ड ने स्पष्ट तौर पर कहा कि टीम इंडिया में सेलेक्शन का आधार घरेलू क्रिकेट रहेगा। ऐसे में खिलाड़ियों को घरेलू क्रिकेट निश्चित तौर पर खेलना होगा।

गौरतलब है कि, पिछले साल ईशान किशन और श्रेयस अय्यर ने बिना अनुमति के घरेलू मैच नहीं खेला जिसके कारण उन्हें अपना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट गंवाना पड़ा। सैमसन के मामले में बोर्ड और चयनकर्ताओं को कोई कारण नहीं बताया गया कि वह टूर्नामेंट से क्यों चूक गए, अब तक जो कुछ भी पता चला है कि वह ये है कि वह अपना अधिकांश समय दुबई में बिताते हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया के हवाले से बीसीसीआई के सूत्रों ने कहा कि, चयनकर्ता और बोर्ड घरेलू क्रिकेट के महत्व पर बहुत स्पष्ट हैं।

बीसीसीआई ने 10 सूत्री निर्देश जारी किए, घरेलू क्रिकेट अनिवार्य, परिवार के दौरे पर रहने पर पाबंदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय क्रिकेट टीम में 'अनुशासन और एकजुटता' को बढ़ावा देने के लिए 10 सूत्री नीति जारी की जिसमें घरेलू क्रिकेट में खेलना अनिवार्य, दौरे पर परिवार और निजी स्टाफ की मौजूदगी पर पाबंदी और श्रृंखला के दौरान व्यक्तिगत विज्ञापन पर प्रतिबंध जैसे कई उपाय शामिल हैं। इस नीति का पालन नहीं करने पर खिलाड़ियों पर जुर्माना लगाया जाएगा जिसमें केंद्रीय अनुबंधों से उनकी रिटेनर फीस में कटौती और लुभावनी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में भाग लेने पर रोक शामिल है। ऑस्ट्रेलिया के दौरे में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद इन निर्देशों की घोषणा की गई है जिसके पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में वाइटवाश का सामना करना

पड़ा था। बोर्ड ने विदेशी दौरों के दौरान खिलाड़ियों के साथ परिवारों के रहने के लिए केवल दो सप्ताह की अवधि को मंजूरी दी है, इसके अलावा निजी स्टाफ और व्यावसायिक फोटो शूट पर प्रतिबंध लगाए हैं। बोर्ड की नीति में कहा गया है, ''इसमें किसी भी अपवाद या विचलन को चयन समिति के अध्यक्ष और मुख्य कोच द्वारा पूर्व-अनुमोदित किया जाना चाहिए। इसका पालन नहीं करने पर बीसीसीआई द्वारा उचित समझी जाने वाली अनुशासनात्मक कार्रवाई हो सकती है।'' नीति में चेताया गया, ''इसके अलावा बीसीसीआई किसी खिलाड़ी के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने का अधिकार सुरक्षित रखता है जिसमें संबंधित खिलाड़ी को आईपीएल सहित बीसीसीआई द्वारा आयोजित सभी टूर्नामेंटों में भाग लेने से रोकना और बीसीसीआई के खिलाड़ी अनुबंध के अंतर्गत रिटेनर राशि या मैच फीस से कटौती करना शामिल हो सकता है।''

14 हजार रिश्वत लेते आरआई रंगेहाथ पकड़ाया

ईओडब्ल्यू ने किया गिरफ्तार, जमीन सीमांकन के लिए 40 हजार मांगे

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। ईओडब्ल्यू की टीम ने शुक्रवार सुबह सतना तहसील कार्यालय में एक आरआई को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा है। आरोपी आरआई अजय सिंह ने एक किसान से जमीन के सीमांकन के लिए 40 हजार रुपए की रिश्वत मांगी थी। जिसकी एक किश्त देने के बाद किसान ने ईओडब्ल्यू से शिकायत की थी।

किसान की शिकायत के बाद ईओडब्ल्यू की टीम ने तहसील कार्यालय में अपना जाल बिछाया, जिसमें तिलौरा आरोपी आरआई अजय सिंह फंस गए।

दरअसल, बिरसिंहपुर के किसान और सांसद प्रतिनिधि रमेश पांडे ने तहसील कार्यालय में अपनी जमीन के सीमांकन के लिए आवेदन किया था। आरआई अजय सिंह ने इस काम के लिए 40 हजार रुपए की मांग की। किसान ने पहले ही 20 हजार रुपए दे दिए थे, लेकिन जब आरआई ने और पैसों की मांग की, तो उन्होंने ईओडब्ल्यू में शिकायत कर दी।

शिकायत की पुष्टि के बाद ईओडब्ल्यू ने एक व्यूह रचना तैयार की। शुक्रवार को किसान ने आरआई को बाकी रिश्वत की राशि देने के लिए सतना सर्किट हाउस बुलाया। जैसे ही आरआई ने 14 हजार रुपए की रिश्वत ली, ईओडब्ल्यू की टीम ने उसे पकड़ लिया। यह कार्रवाई ईओडब्ल्यू डीएसपी किरण कीरो और निरीक्षक मोहित सक्सेना के नेतृत्व में की गई।

बिजनेस न्यूज़

दुर्लभ स्पाइन विकार से पीड़ित बच्चे की सर्जरी, दो हिस्सों में विभाजित रीढ़ की हड्डी को किया ठीक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नागपुर क्षेत्र में जटिल पेडियाट्रिक स्पाइन विकृति के लिए पहली बार मल्टीमोडैलिटी इंट्राऑपरेटिव न्यूरोमॉनिटरिंग गाइडेड सर्जरी सफलतापूर्वक की गई, जो उन्नत न्यूरोलॉजिकल उपचार में महत्वपूर्ण साबित हुई। इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने वोक्हार्ट सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल्स, नागपुर को मध्य भारत में अत्याधुनिक चिकित्सा उपचार का प्रमुख केंद्र बना दिया है। एक 3 साल के बच्चे को चलने में कठिनाई और मल/मूत्र पर नियंत्रण खोने की शिकायत के साथ वोक्हार्ट हॉस्पिटल लाया गया। उसके रीढ़ की हड्डी में असामान्य झुकाव (जिसे स्कोलियोसिस कहा जाता है) और दोनों पैरों में ऑर्थोपेडिक विकृति (बायलैटरल क्लब फीट) भी थी। उसकी एमआरआई और सीटी स्कैन से एक जटिल असामान्यता का पता चला, जिसमें रीढ़ की हड्डी दो भागों में विभाजित थी और इसके बीच एक हड्डी की नोक थी और निचले हिस्से में फैटी ट्यूमर था और रीढ़ की हड्डी का निचला सिरा सामान्य से नीचे स्थित था। इस विकृति को "डायस्टेमेटोमाइलिया विद हेमिकॉर्ड एंडिंग इनटू कंटिग्यूस डोर्सल लिपोमा एंड टेथर्ड फिलम टर्मिनाले विद फैटी इन्फिल्ट्रेशन" कहा जाता है, (यानी डायस्टेमेटोमाइलिया जिसमें हेमीकॉर्ड का अंत सन्निहित पृष्ठीय लिपोमा और फैटी इन्फिल्ट्रेशन के साथ टेथर्ड फिलम टर्मिनल में होता है)" जो एक बहुत ही दुर्लभ विकार है। जटिल विकृति और कार्यशील नसों के पास असामान्य हड्डी और ट्यूमर के बहुत करीब होने के कारण, यह सर्जरी बहुत जोखिम भरी थी, जिसमें गलती की कोई गुंजाइश थी, और यह मरीज को दोनों अंगों से पैरेलाइज्ड और जीवनभर बिस्तर पर पड़े रहने का कारण बन सकती थी। अत्यधिक सावधानी से मल्टीमोडैलिटी इंट्राओपरेटिव नर्व मॉनिटरिंग (आईओएनएम) के साथ 9 घंटे लंबी सर्जरी सफलतापूर्वक की गई। आईओएनएम एक ऐसी तकनीक है जिसमें मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के महत्वपूर्ण भागों को कम तीव्रता वाली इलेक्ट्रिक करंट से उत्तेजित किया जाता है और शरीर के उन हिस्सों से प्रतिक्रियाएं रिकॉर्ड की जा सकती हैं जो उस मस्तिष्क या रीढ़ द्वारा नियंत्रित होते हैं। इस तकनीक के माध्यम से सर्जरी के दौरान महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करना और उनकी कार्यात्मक स्थिति के बारे में लगातार और वास्तविक समय में जानकारी प्राप्त करना संभव होता है। यह प्रक्रिया न्यूरोसर्जन को आसपास की किसी भी बीमारी को अधिकतम और सुरक्षित तरीके से हटाने में मदद मिलती है। यह प्रक्रिया वोक्हार्ट हॉस्पिटल की टीम द्वारा सफलतापूर्वक की गई, जिसका नेतृत्व हमारे विशेषज्ञ और अत्यधिक कुशल डॉ. कार्तिक मनोज मुल्तानी, न्यूरोसर्जन, वोक्हार्ट हॉस्पिटल, नागपुर ने किया, जिसमें अन्य क्लिनिकल और नॉन-क्लिनिकल सहयोगियों का भी शामिल थे।

नगर निगम में 200 आउटसोर्स भर्तियों का विरोध

कर्मचारी संघ ने किया प्रदर्शन, स्थापना व्यय बढ़ने और नियमितीकरण नहीं होने पर चिंता जताई

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना नगर निगम में स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत आउटसोर्स एजेंसियों के माध्यम से की जा रही 200 कर्मचारियों की भर्ती के विरोध में कर्मचारी संघ ने प्रदर्शन किया। शुक्रवार को दैनिक मस्टर श्रमिक, कंप्यूटर ऑपरेटर और संविदा कर्मचारियों ने एकजुट होकर कार्यालय के बाहर नारेबाजी की और महापौर को ज्ञापन सौंपा।

कर्मचारी संघ की प्रमुख चिंता है कि इन थोक भर्तियों से नगर निगम के खजाने पर अतिरिक्त स्थापना व्यय का बोझ बढ़ेगा। संघ का मानना है कि इससे न केवल निगम की वित्तीय स्थिति प्रभावित होगी, बल्कि वर्तमान में कार्यरत मस्टर रोल और संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण की प्रक्रिया भी प्रभावित हो सकती है।

मामले में महापौर ने कहा कि नगर निगम ने दो निजी संस्थाओं को आउटसोर्स कर्मचारी भर्ती का टेंडर दिया है। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे इस पूरे मामले की जांच कराएंगे। कर्मचारियों की चिंताओं को देखते हुए यह मामला अब गंभीर मोड़ पर पहुंच गया है।

पंचायत सहायकों ने मंत्री को सौंपा ज्ञापन

मानदेय वृद्धि से लेकर स्थायी नियुक्ति की मांग, जल्द समाधान का दिया आश्वासन

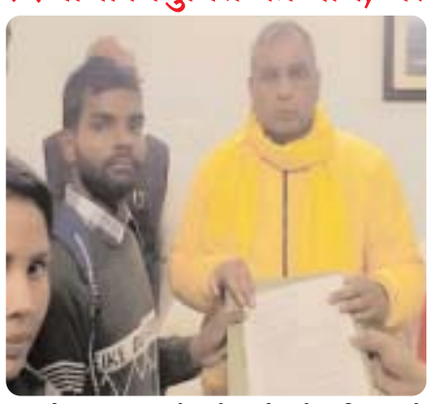

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट में पंचायत सहायकों ने पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर को जिला एडमिन उमेश कुमार के नेतृत्व में डाक बंगला कर्वी में एक महत्वपूर्ण ज्ञापन सौंपा। पंचायत सहायकों ने अपनी विभिन्न मांगों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि वे ग्राम पंचायत स्तर पर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पंचायत सहायकों की प्रमुख मांगों में मानदेय को बढ़ाकर 26,910 रुपए प्रतिमाह करना और इसे राज्य पोषित करना शामिल है। साथ ही उन्होंने प्रति आवेदन मिलने वाली 5 रुपए की प्रोत्साहन राशि को सीधे ग्राम निधि में भेजने की मांग की है। अनुबंध प्रणाली को समाप्त कर स्थायी नियुक्ति की मांग भी प्रमुख है।

ग्राम पंचायत अधिकारी के रिक्त पदों पर आरक्षण की मांग: महिला पंचायत सहायकों के लिए स्थानांतरण नीति की मांग की गई है। साथ ही, नगर पंचायत में जाने वाली ग्राम पंचायतों के सहायकों को अन्य रिक्त ग्राम पंचायतों में समायोजित करने का प्रस्ताव रखा गया है। पंचायत सहायकों ने ग्राम पंचायत अधिकारी के रिक्त पदों पर आरक्षण की मांग भी की है।

कार्य सुविधा के लिए उच्च गुणवत्ता वाले मोबाइल फोन या टैबलेट की मांग की गई है। इसके अतिरिक्त, पंचायत सहायकों के परिवारों को आयुष्मान भारत योजना में शामिल करने की मांग भी प्रमुख है। मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने सभी मांगों पर गंभीरता से विचार कर जल्द समाधान का आश्वासन दिया है।

बल्कि ग्रामीण विकास योजनाओं को भी अधिक प्रभावी और सुचारू रूप से लागू किया जा सकेगा। ज्ञापन में शामिल प्रमुख लोग थे। जिला एडमिन उमेश कुमार, ग्राम पंचायत मकरी पहरा की पंचायत सहायक नंदनी देवी, ग्राम पंचायत भारतपुर के पंचायत सहायक दिनेश कुमार, ग्राम पंचायत बंदरी के पंचायत सहायक धर्मेंद्र कुमार, ग्राम पंचायत गढ़वा के पंचायत सहायक आशीष कुमार, और ग्राम पंचायत रमयापुर के पंचायत सहायक रामानंद पांडे आदि। यह ज्ञापन चित्रकूट जिले में पंचायत सहायकों की समस्याओं के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। स्थानीय प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई की उम्मीद जताई जा रही है।

प्रिज्म सीमेंट द्वारा क्रिकेट किट का वितरण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत ग्राम ग्राम बगहाई एवं बदरखा के युवा क्रिकेट खिलाड़ियों के लिए क्रिकेट किट वितरण समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अखिलेश शर्मा उपाध्यक्ष, जनपद पंचायत रामपुर बाघेलान, नीलकंठ पाण्डेय, सरपंच ग्राम पंचायत हिनौती, आशा साकेत, सरपंच ग्राम पंचायत बगहाई, मनीष कुमार सिन्हा, सीनियर वाइस प्रेसीडेंट, एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स, एवं स्थानीय ग्रामीणजनों व खिलाड़ियों की उपस्थिति में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मनीष कुमार सिन्हा, सीनियर वाइस प्रेसीडेंट, एचआरएम एंड कार्पोरेट अफेयर्स, ने अपने संबोधन में कहा कि ''हमारा उद्देश्य युवाओं को सही सुविधाएं प्रदान करना है ताकि वे राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ सकें।''

नीलकंठ पाण्डेय, सरपंच ग्राम पंचायत हिनौती ने कहा कि ''युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करने और उनकी खेल प्रतिभा को निखारने के लिए यह एक सराहनीय कदम है। इससे खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का बेहतर मौका मिलेगा।''

समारोह में प्रिज्म जॉनसन लिमिटेड के एजीएम सीएसआर एंड पब्लिक रिलेशन देवेन्द्र मिश्रा ने जानकारी देते हुये बताया कि किट में उच्च क्वालिटी के बल्ला, बॉल, पैड, ग्लव्स और अन्य आवश्यक सामान शामिल हैं। इस पहल ने युवा खिलाड़ियों और उनके परिवारों के बीच काफी उत्साह और उम्मीदें जगा दी हैं। खिलाड़ियों ने इस अवसर पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह उनके क्रिकेट कैरियर को संवारने में मदद करेगा। कार्यक्रम में मनोज साकेत, अजय शर्मा, मंगलेश सिंह एवं अन्य ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

ट्रेन से कटकर युवक की मौत

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के मानिकपुर में स्थित लोहगरा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत हो गयी। मध्य प्रदेश के रीवा जिले के चौखड़ा गांव का रहने वाला 19 वर्षीय हिमांशु कुमार, जो अपनी नानी के घर आया हुआ था। ट्रेन से कटकर मौत हो गई। गुरुवार रात करीब 9 बजे हिमांशु घूमने के लिए घर से निकला था। देर रात तक लौटने पर परिवार वाले उसकी तलाश में निकले। खोजबीन के दौरान जब वे लोहगरा रेलवे स्टेशन पहुंचे। वहां ट्रैकमैन ने उन्हें एक युवक के ट्रेन से कटने की जानकारी दी। इसके बाद परिजन तुरंत मानिकपुर जीआरपी पुलिस से संपर्क में आए। जहां उन्हें हिमांशु का शव मिला। मानिकपुर जीआरपी थाना प्रभारी के अनुसार मामले की गहन जांच की जा रही है। पुलिस ने शुक्रवार को शव का पोस्टमॉर्टम कराया और परिजनों से घटना के संबंध में विस्तृत जानकारी जुटाई जा रही है।

बेटी के सामने पिता ने किया सुसाइड

परिजन बोले- बेटी के सामने कमरे में जाकर लगा ली फांसी

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट जिले के शिवरामपुर चौकी क्षेत्र में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। पथरौड़ी गांव में 38 वर्षीय कामता प्रसाद ने गुरुवार की देर रात को अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। दुखद पहलू यह है कि घटना के समय घर में उनकी 8 वर्षीय बेटी खुशबू मौजूद थी।

परिजनों के मुताबिक, आत्महत्या से पहले कामता का व्यवहार पूरी तरह सामान्य था। घटना वाले दिन परिवार के अन्य सदस्य अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त थे। कामता ने कमरे में जाकर दुपट्टे का फंदा बनाया और आत्महत्या कर ली। शाम को जब परिवार के सदस्य घर लौटे, तो उन्होंने यह दर्दनाक दृश्य देखा।

पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही: घटना की सूचना मिलते ही शिवरामपुर चौकी की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जिला मुख्यालय भेज दिया। शुक्रवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही है, लेकिन अभी तक कोई ठोस वजह सामने नहीं आई है। इस घटना से पूरे गांव में शोक की लहर है और स्थानीय लोग भी इस अचानक हुई त्रासदी से सदमे में हैं।

गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह पुलिस परेड ग्राउंड में

कलेक्टर ने ली तैयारियों संबंधी बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। गणतंत्र दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय मुख्य समारोह पुलिस परेड ग्राउंड सतना में आयोजित किया जायेगा। जिला मुख्यालय के समारोह में प्रातः 9 बजे कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजारोहण कर मुख्यमंत्री जी के संदेश का वाचन किया जायेगा। इस आशय की जानकारी कलेक्टर अनुराग वर्मा की अध्यक्षता में संपन्न गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारी संबंधी बैठक में दी गई। इस मौके पर अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे, सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. शिवेश सिंह बघेल सहित एसडीएम राहुल सिलाडिया, एलआर जांगडे, आरएन खरे सहित विभागों के प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर वर्मा ने बताया कि जिला मुख्यायालय, नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद, जनपद एवं ग्राम पंचायतों के कार्यालयों में ध्वजारोहण के कार्यक्रम होंगे। जिला स्तरीय समारोह में जिला पुलिस बल, विशेष सशस्त्र बल और होमगार्ड द्वारा संयुक्त परेड का आयोजन किया जायेगा। आयोजन स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा योजनाओं की उपलब्धियों एवं विकासपरख झाकियां निकाली जायेंगी। कलेक्टर श्री वर्मा ने सभी संबंधित अधिकारियों को राज्य शासन के निर्देशानुसार गणतंत्र दिवस समारोह के आयोजन की तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। उन्होने संपूर्ण गरिमा के साथ पूरे जिले में गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम किये जाने के निर्देश भी दिये हैं। पिछले वर्ष की तरह परेड ग्राउंड की साज-सज्जा लोक निर्माण विभाग द्वारा की जाएगी। समारोह की गरिमा के अनुसार परेड के समय परेड ग्राउंड में किसी भी व्यक्ति को इधर-उधर घूमने नहीं दिया जाएगा। मीडिया और फोटोग्राफर्स के लिए कव्हरेज की व्यवस्था पूर्व वर्ष की भांति की जाएगी। समारोह में प्रस्तुत होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए डीईओ, एसडीएम सिटी, एमएलबी प्राचार्य और कन्या स्कूल धवारी के प्राचार्य की समिति बनाई गई है। सीईओ जिला पंचायत की अध्यक्षता में चयन समिति गठित की गई है। पुलिस परेड ग्राउंड में सभी विभागों के अधिकारियों को आयोजन से संबंधित जिम्मेदारियां दी गई हैं। कलेक्टर ने कहा कि विभागों एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्या के लिए प्रोत्साहन एवं सम्मान प्राप्त करने वालों के नाम कार्यों की टीप सहित विभाग प्रमुख अधिकारी 20 जनवरी तक प्रस्तुत कर देवें।

सेतु एक गांव को दूसरे गांव से जोडने के साथ ही वहां की विकास गाथा भी लिखते है: राज्यमंत्री

राज्यमंत्री ने किया 6 करोड 62 लाख रूपये के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने शुक्रवार को रैगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम नदना, बसुधा तथा डाम्हा ग्राम में 6 करोड 62 लाख 23 हजार रूपये लागत के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण किया। इसमें लगना से सुसुवार मार्ग में लगना नदी में 1 करोड 51 लाख 86 हजार की लागत से पुल निर्माण एवं बीटी रोड ग्राम नदना से पुरवा तक 8 किमी लम्बाई की 1 करोड 15 लाख 25 हजार रूपये की लागत की डामरीकृत सडक, 1 करोड 98 लाख 22 हजार रूपये की लागत से बीटी रोड ग्राम बसुधा-पडरौत मार्ग के बीच सतना नदी में निर्मित पुल में गेट एवं पहुंच मार्ग निर्माण, बीटी रोड ग्राम बसुधा से हिनौता ग्राम तक 1 करोड 80 लाख 68 हजार रूपये की लागत से डामरीकृत सडक निर्माण, ग्राम पंचायत डाम्हा में 11 लाख 22 हजार रूपये की लागत से आंगनवाडी भवन निर्माण कार्य का भूमिपूजन तथा ग्राम पंचायत डाम्हा के ग्राम कोलाड में राजीव लोचन के घर से नवस्ता नाला तक ग्रेवल रोड निर्माण कार्य का लोकार्पण शामिल है। इस मौके पर ग्राम पंचायत नदना सरपंच अजय द्विवेदी, समाज सेवी संजय शुक्ला, आकांक्षा सिंह, श्रीओम सिंह, यशवंत पाण्डेय, प्रमीश त्रिपाठी, हीरामन सिंह, योगेंद्र शुक्ला, दीपक सिंह, राकेश सिंह, योगेंद्र सिंह राजा, आशीष सिंह, अरविन्द त्रिपाठी. अंजनी त्रिपाठी, भूपेंद्र पाण्डेय, रघुराज सिंह, सैलू सिंह, भूपेंद्र सिंह, बद्री विशाल महराज, राजकुमार द्विवेदी, राजमणि शर्मा, शैलेंद्र शर्मा सहित सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि तथा ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

राज्यमंत्री बागरी ने कहा कि रैगांव विधानसभा क्षेत्र के ग्रामों में कई वर्षों से पुल निर्माण कराये जाने की मांग की जा रही थी। ग्रामवासियों को आवागमन में हो रही परेशानी दूर हो। इसके लिए बाबूपुर-पाकर ग्राम से पुल निर्माण का कार्य शुरू किया जो आज नदना तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि सेतु वास्तव में सिर्फ एक गांव को दूसरे गांव से जोडते नहीं हैं, बल्कि उस क्षेत्र के विकास की गाथा भी लिखते हैं। राज्यमंत्री ने कहा कि सभी पुल और सडकों का निर्माण कार्य गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में कराया जाये। जिससे ग्रामवासियों को आवागमन में सुविधा हो। उन्होंने कहा कि रैगांव विधानसभा क्षेत्र में सर्किट या रेस्ट हाउस नहीं है। इसके लिए पूर्व में राशि जारी की जा चुकी है। एक बार भी टेंडर निरस्त होने के बाद दोबारा टेंडर हुआ है। जल्द ही नगर परिषद कोठी में रेस्ट हाउस का निर्माण कार्य प्रारंभ होगा। राज्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार और प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा हर गरीब, युवा, मातृशक्ति तथा किसानों को जनकल्याणकारी योजनाओं से सशक्त बनाया जा रहा है। सरकार सभी प्रकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है।

यूटीआई म्यूचुअल फंड ने सतना में खोलेगा एक नया वित्तीय केंद्र

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। देश की अग्रणी म्यूचुअल फंड कंपनी यूटीआई एसेट मैनेजमेंट कंपनी (यूटीआई एएमसी) ने सतना में अपना यूटीआई फाइनेंशियल सेंटर खोलने की घोषणा की है। यह केंद्र अहिंसा टॉवर, प्रथम तल पुष्पराज कॉलोनी पर स्थित है। कंपनी ने देश भर में वितरण और निवेशक तक अपनी पहुंच को मजबूत करने के लिए अपने केंद्रित विस्तार के हिस्से के रूप में 20 जनवरी को 33 नए यूटीआई फाइनेंशियल सेंटर (शाखाएं) खोलने की घोषणा की है। इस विस्तार का उद्देश्य वित्तीय निवेश संबंधी सुविधाओं में सुधार करना और निवेशकों को बेहतर वित्तीय निर्णय लेने में मदद करना है। कार्यालयों का यह प्रसार देश भर मंए निवेशकों के साथ गहरे संबंध बनाने और अधिक समावेशी निवेश संस्कृति को बढ़ावा देने के यूटीआई एएमसी के चल रहे प्रयासों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अपर कलेक्टर ने धान खरीदी केन्द्रों का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे ने शुक्रवार को नागौद के उमरहट धान खरीदी केन्द्र का निरीक्षण किया। उन्होंने प्रेरणा महिला स्व सहायता समूह उमरहट में संचालित खरीदी केंद्र का निरीक्षण किया। इस मौके पर कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, सहकारिता निरीक्षक, वेयर हाउसिंग नागौद के ब्रांच मैनेजर नागौद भी उपस्थित थे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।